ग्रीन रिवोल्ट

हरित-नीरा रहे वसुंधरा

पेजः 4

पुरुषों के मुकाबले ज्यादा सक्रिय हैं भारतीय महिलाएं

रविवारीय, 27 जून - 03 जुलाई 2021 वर्ष- दो, अंक-47, रांची, कुल पृष्ठ 4 हिन्दी साप्ताहिक R.N.I. No. JHAHIN/2019/78094 www.greenrevolt.news मूल्यः 5 रूपये

ग्रीन रिवोल्ट के पाठकों से आग्रह है कि आप पर्यावरण, कृषि, जल संरक्षण, पशुपालन, बागवानी , पेट्स, वृक्षारोपण से संबंधित खबरें, समस्यायें, लेख,सुझाव, प्रतिक्रियायें या तस्वीरें हमें अवश्य भेजें। हमारा इमेल एवं हवाट्सएप नंबर है।

greenrevolt2019@gmail.com

9798166006

सुंदरवन से निकला 10 टन प्लास्टिक, सफाई जारी

यास चक्रवात के बाद राहत पहुंचाने के लिए सुंदरवन में पानी की बोतलें, खाद्य सामग्री के पैकेट्स दिए गए, जिन्हें अब हटाया जा रहा है

यास चक्रवात के बाद सुंदरवन के प्रभावित लोगों तक राहत सामग्रियां पहुंचाने के लिए कई एनजीओ आगे आये और उनकी तरफ से भोजन से लेकर पानी तक पहुंचाया गया। लेकिन इस राहत अभियान ने सुंदरवन के इको-सिस्टम पर भी बहुत असर डाला है। सुंदरवन की नदियां-तालाब व जमीन प्लास्टिक के बोतल, फुड पैकेट्स, पाउच आदि से भर गये।

सुंदरवन का इलाका पश्चिम बंगाल के उत्तर व दक्षिण 24 परगना जिले में फैला हुआ है, लेकिन मई में आये यास चक्रवात ने दक्षिण 24 परगना जिले में ज्यादा नुकसान पहुंचाया था। आधिकारिक आंकड़ों के मुताबिक, इस चक्रवात में 2.21 लाख हेक्टेयर फसल और 71560 हेक्टेयर बागवानी बर्बाद हो गये। चक्रवात से पश्चिम बंगाल सरकार को 20 हजार करोड़ का नुकसान हुआ।

हरियाली विहीन होती रांची

मनोज कुमार शर्मा

रांची : झारखंड की राजधानी और बिहार की ग्रीष्मकालीन राजधानी रही है रांची। इस शहर में मुहल्लों के नाम सुनिये.... *काजू बगान, अमरूद बगान, लीची बगान, केतारी बगान, चाय बगान, कटहल बगान, आम बगान*। इन नामों से आप स्वतः ये अनुमान लगा सकते हैं कि रांची शहर में कभी फलों के बगानों की भरमार थी। आज ये सभी बगान सिर्फ कहने को फलों के नाम से हैं अब यहां इन फलों के शायद एक पेड़ भी देखने को नहीं मिलेंगे। पिस्का मोड़ से आगे सर्ड ऑफिस कैंपस की ओर जाने पर काजू बगान है। जहां तीन काजू के पेड़ अब भी बचे हुये हैं।

शहरीकरण और बेतहाशा बढ़ती आबादी ने शहर के बाग बगीचों को बर्बाद कर दिया। इन बगीचों को खत्म कर वहां घने रिहायशी मुहल्ले बसा दिये गये हैं। इसी कारण से रांची में महज कुछ सालों में ही हरियाली का विनाश हुआ और आज रांची पूरे देश में सबसे कम हरियाली वाले राजधानी के शहरों में शामिल है। ये तमगा शर्मनाक भी है और रांची के पुराने बाशिंदों समेत इस शहर को प्यार करने वालों के लिये दुखद आश्चर्य की बात भी हैं क्योंकि रांची वो शहर है जहां लुप्तप्राय कल्पतरू के पेड़ भी स्थित रहे हैं।

देश के अन्य हिस्सों में रांची की छवि जलप्रपातों, पहाड़ियों और जंगलों से आच्छादित सुंदर रमणिक शहर की है, पर हकीकत में रांची मुख्य शहर से हरियाली खत्म हो चुकी है। अपार्टमेंट बनाने के लिये हरियालीयुक्त जगहों को काटना, ग्रीनलैंड का अतिक्रमणऔर भूमाफियाओं की हरकत ने रांची के

रांची के पहाड़ी मंदिर से ली गयी तस्वीर में चारो ओर कंक्रीट के जंगल ज्यादा नजर आते हैं वहीं हरियाली सिमटती जा रही है

हरियाली को खात्मे के कगार पर ला दिया है। पहाड़ी मंदिर के शीर्ष से चारो ओर ताकने पर सिर्फ कांके रोड एवं मोराबादी के इलाके में ही हरियाली नजर आयेगी। बाकी चारो ओर सिर्फ और सिर्फ बेतहाशा कंक्रीट के जंगल बढते हुये दिखेंगे।

वर्तमान में रांची की आबादी तकरीबन 15 लाख है। अब हालत ये है कि पहले जिन इलाकों में लोग दिन में भी जाने से डरते थे वहां भी जंगलों पहाड़ों का अब अतिक्रमण हो चुका है। कुछ साल पहले जहां बड़े मैदान और पेड़ पौधे नजर आ रहे थे वहां आज घनी बस्तियां हैं। नदी तालाब सभी अतिक्रमण और अवैध निर्माण के कारण लुप्त हो रहे हैं और बगानों का शहर तेजी से हरियाली विहीन हो रहा है।

प्रति व्यक्ति नो वर्गमीटर जंगल की जरूरत

आधुनिक शहरीकरण के लिहाज से कहा गया है कि प्रति व्यक्ति नौ वर्ग मीटर का जंगल होना अच्छा है, पर रांची में ऐसी उपलब्धता नहीं है। लोग अपने विशाल परिसर में बड़ा सा गार्डेन और बाग तो लगाते हैं, पर शहर में प्राकृतिक हरियाली या सरकारी जमीनों पर सिथत हरियाली ही निवासियों को स्वच्छ हवा, छांव और पर्यावरण उपलब्ध कराती है। जिसे तकरीबन खत्म कर दिया गया है।

वहीं रांची के आस पास बनने वाली सड़कों एवं हाइवे के निर्माण में भी बहुत सारे विशाल पुराने पेड़ों को काटा गया। जिसकी भरपाई तुरंत संभव भी नहीं

स्मार्ट सिटी लीडरशीप अवार्ड पर रांची हो रही उजाड़

हाल ही में रांची को स्मार्ट सिटी बनाने में अच्छे प्रोग्रेस के लिये स्मार्ट सिटी लीडरशीप अवार्ड मिला है। साथ ही पिछले वर्ष ये दावा किया गया था कि राज्य में वन क्षेत्र में कुछ विस्तार हुआ है जो अब कूल क्षेत्र का 33 प्रतिशत है, पर स्वयं रांची शहर की क्या हालत है। मोराबादी और एचइसी के कुछेक यूक्लिप्टस के जंगलों को छोड़ दें तो शहर के घने बाग बगीचे अपार्टमेंट और बिल्डरों की भेंट चढ़ चुके हैं। सिर्फ सजग लोगों के प्रयास जैसे **टीम ग्रीन** और कुछेक पर्यावरण प्रेमी ही अपने एकल प्रयास से रांची को हरा भरा बनाने में लगे हुये हैं।

कितना सफल होगा? मेरी रांची मेरी जिम्मेदारी अभियान

भारतीय वन सेवा के अधिकारी सिद्धार्थ त्रिपाठी रांची को हरा भरा बनाने के लिये मेरी रांची मेरी जिम्मेदारी अभियान प्रारंभ करने जा रहे हैं। इस कार्य में योगदान देने के लिये रांची के कई लोगों और प्रतिष्ठानों ने सहमति दी है। सीआइएसएफ ने भी इसमें मदद करने की बात कही है। वृक्षारोपण का पंचवर्षीय प्लान तैयार किया है। इसके तहत पहले चारदिवारी वाले शैक्षणिक, गैर शैक्षणिक, सरकारी बड़े परिसरों में देशी वृक्षों को लगाया जायेगा। इसके बाद खुले जगहों पर वृक्षारोपण किया जायेगा। इसे जल संरक्षण से भी जोड़ने की योजना है।

क्या है डेल्टा प्लस वैरिएंट? स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से कितना है खतरनाक?

एक तरफ जहां देश कोरोनावायरस की तीसरी लहर का सामना करने की तैयारी कर रहा है, ऐसे में इस नए डेल्टा प्लस वैरिएंट ने लोगों की चिंताएं और बढ़ा दी हैं। देश में एक ओर जहां पिछले कुछ समय से कोविड-19 के मामलों में कमी आई है। साथ ही इस वायरस की दूसरी लहर का घटता हुआ दिख रहा है और देश तीसरी लहर का सामना करने की तैयारियों में जुटा हुआ है। ऐसे में कोरोनावायरस के एक नए वैरिएंट डेल्टा प्लस (एवाई.1) ने सरकार और लोगों की चिंताएं और बढ़ा दी हैं। तेजी से फैलने वाला डेल्टा वैरिएंट म्यूटेशन के बाद डेल्टा प्लस वैरिएंट में तब्दील हो चुका है। जिसे भारत सरकार ने भी वैरिएंट ऑफ कंसर्न यानी चिंताजनक वैरिएंट के रूप में वर्गीकृत कर दिया है। आईए जानते हैं कोरोनावायरस के इस नए वैरिएंट डेल्टा प्लस के बारे में।

क्यों होता है वायरस में म्यूटेशन?

कोई भी जीव यहां तक की वायरस भी जब नए वातावरण और परिवेश में जाता है तो यह उसकी सहज वृति होती है कि वो अपने आप को उसके मुताबिक ढालने की कोशिश करता है। जिससे वो जीवित रह सके और अपना विकास कर सके। जब वातावरण में यह बदलाव बड़ी तेजी से होते हैं तो यह अनुकूलन म्यूटेशन के रूप ले लेता है। जिसके कारण जीवों के जीनोम में बदलाव आ जाता है। जिससे जीवों में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह के बदलाव आ सकते हैं।इसी तरह वायरस में भी म्यूटेशन होते रहते हैं, इनमें से अधिकांश बदलाव कोई ज्यादा असर नहीं डालते। लेकिन कुछ बदलाव वायरस को अधिक संक्रामक और खतरनाक बना देते हैं।

क्या है यह डेल्टा प्लस वैरिएंट?

चिंताजनक डेल्टा प्लस वैरिएंट (एवाई.1), दुनिया के 80 से ज्यादा देशों में फैल चुके डेल्टा वायरस (बी.1.617.2) में आए म्यूटेशन का नतीजा है, जो सबसे पहले यूरोप में सामने आया था। यह वायरस सुपर-स्प्रेडर है, जिसका मतलब है कि यह आसानी और बहुत तेजी से फैल सकता है। यही वजह है कि भारत सरकार ने भी इसे वैरिएंट ऑफ कंसर्न यानी चिंताजनक वैरिएंट के रूप में वर्गीकृत किया है। डेल्टा प्लस वैरिएंट में वायरस के स्पाइक पर एक और म्यूटेशन के417एन भी पाया गया है, जो बीटा और गामा वेरिएंट में पाया जाता है, यह इसे कहीं ज्यादा खतरनाक बना देता है।

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से कितना है खतरनाक?

डेल्टा प्लस वैरिएंट की गंभीरता का अंदाजा आप इसी बात से लगा सकते हैं कि भारत सरकार ने भी इसे वैरिएंट ऑफ कंसर्न (वीओसी) यानी चिंताजनक वायरस की श्रेणी में वर्गीकृत कर दिया है। यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफ़ोर्निया द्वारा हजारों नमूनों की जीनोम सीक्वेंसिंग से पता चला है कि कोरोनोवायरस के नए वेरिएंट की उपस्थिति के चलते संक्रमण के मामले में वृद्धि हो सकती है। डेल्टा की तरह ही यह डेल्टा प्लस वैरिएंट भी सुपर स्प्रेडर है, जो बहुत तेजी से फैल सकता है। साथ ही यह फेफड़ों की कोशिकाओं के रिसेप्टर्स से मजबूती से जुड़ने में सक्षम है। यह वायरस मोनोक्लोनल एंटीबॉडी थेरेपी के प्रति भी संभावित रूप से प्रतिरोधी है, गौरतलब है कि इस थेरेपी का उपयोग वायरस को बेअसर करने के लिए किया जाता है।

ललित मौर्य

वनोपज से झारखंड के ग्रामीणों की बढ़ी आमदनी

संवाददाता

रांची : झारखण्ड के वनोपज कुसुम और करंज के तेल अब सौंदर्य प्रसाधन, कीटनाशक और औषधि के तौर पर उपयोग में लाया जा रहा है। वहीं वनोपज पर निर्भर लोगों के आर्थिक विकास का वाहक भी बन रहा है। लगभग 12 हजार 500 महिला-पुरुष किसानों को करंज और कुसुम के फल संग्रह कार्य से जोड़ा गया है। इससे लगभग 1500 से 4000 रुपये प्रतिमाह की आमदनी इस कार्य से जुड़े प्रति किसान को हो रही है। साथ ही रूरल सर्विस सेंटर से बतौर सदस्य जुड़ कर 300 किसान दो से साढ़े चार हजार तक की आमदनी कर रहे हैं।

- सरकार ने 12,500 महिला-पुरुषों को कुसुम व करंज के संग्रहण से जोड़ा
- वनोपज को मिल रहा बाजार, हो रहा ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सुधार
- प्रति किसान 1500 से 4000 रुपये प्रतिमाह की हो रही आमदनी

ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मिला बल

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने वनोपज पर निर्भर लोगों को वनोपज का सही मूल्य दिलाने का निर्देश दिया था। इसके बाद जेएसएलपीएस ने योजनाबद्ध ढंग से कार्य प्रारंभ किया। उसने राज्य के सिमडेगा, गुमला, खूंटी, हजारीबाग और लातेहार में अपनी औषधीय संयंत्र परियोजना के तहत लगभग 12,500 किसानों को अवसर प्रदान किया। किसानों को व्यवसाय करने के लिए उत्पादक समूह से जोड़ा। उन्हें करंज और कुसुम जैसे वनोपज को वैज्ञानिक तरीके से संग्रह के लिए प्रशिक्षित किया गया। उद्देश्य था, किसानों को सही मूल्य मिल सके और संग्रह किये गए उत्पाद बर्बाद न हों।

मार्ट के माध्यम से उपलब्ध कराया बाजार

किसानों द्वारा वनोपज उत्पादक समूह के माध्यम से एकत्र किया जाता है और फिर ग्रामीण सेवा केंद्र को बेचा जाता है। ग्रामीण सेवा केंद्र में ऑयल एक्सपेलर यूनिट भी लगाई गई है। यहां कुल 11.2 मीट्रिक टन करंज तेल का उत्पादन किया गया है। इसमें से 1800 किलोग्राम करंज तेल बिक्री के लिए उपलब्ध कराया गया है। वर्तमान में पलाश मार्ट के माध्यम से बाजार में 1 लीटर की बोतलों में तेल को पैक कर 155 रुपये में बेचा जा रहा है। हजारीबाग के कटकमसांडी स्थित ग्रामीण सेवा केंद्र और दारू प्रखंड स्थित वनोपज किसान निर्माता कंपनी की मदद से कुसुम और करंज तेल को पलाश मार्ट के माध्यम से खुले बाजार में भी लॉन्च किया है। पशुओं की त्वचा से संबंधित देखभाल के लिए किसानों को बिक्री के लिए 10,000 बोतलें पैक की गई हैं।

बहुत उपयोगी है करंज और कुसुम का तेल

कुसुम और करंज झारखण्ड के वन क्षेत्रों में सबसे अधिक पाए जाने वाले वनोत्पादों में एक हैं। ये मुख्य रूप से सिमडेगा, खूंटी, लातेहार, गुमला और हजारीबाग में पाया जाता है। इसके तेल कई तरह से उपयोग में लाया जाता है। जैसे कुसुम तेल मुख्य रूप से बालों की देखभाल में, खाना पकाने और प्राकृतिक मॉइस्चराइजर के लिए उपयोग किया जाता है। करंज का उपयोग कीट विकर्षक के रूप में किया जाता है। इसमें कीटनाशक और एंटीसेप्टिक गुण होते हैं और एक्जिमा, त्वचा की जलन, रूसी आदि को ठीक करता है। करंज तेल की मांग दिवाली में दीये जलाने के लिए प्रचुर मात्रा में होती है। कुसुम और करंज के औषधीय क्षेत्र में भी कई उपयोग हैं। इसका उपयोग साबुन निर्माण में भी किया जाता है।

यह सरकार की सफलता है कि झारखण्ड के वनोपज के संगठित संग्रहण, उसे उपयोगी उत्पाद में बदलने और बाजार मुहैया कराने रहे हैं। साथ ही इस पर निर्भर लोगों को आज की मांग के अनुरूप प्रशिक्षित कर उनके आर्थिक विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ है।

भारतीय वैज्ञानिकों ने बनाया कंपन से बिजली उत्पन्न करने की मशीन

यह उपकरण 11 एलईडी बल्बों को रोशन कर सकता है, इसका उपयोग अपने आप चलने वाले उपकरणों और जैव चिकित्सा में किया जा सकता है।

वैज्ञानिकों ने एक आसान, कम लागत वाला, जैव-संगत, पारदर्शी नैनो जेनरेटर तैयार किया है। यह इलेक्ट्रॉनिक और प्रकाश दोनों के उपयोग से संबंधित तकनीक है, जिसे ऑप्टोइलेक्ट्रॉनिक्स भी कहते हैं। यह अपने आप चलने वाला उपकरण कंपन से बिजली उत्पन्न कर सकता है। अक्षय ऊर्जा से संबंधित संसाधन इन चुनौतियों से पार पाने में अहम भूमिका निभा सकते हैं। इसे ट्राइबोइलेक्ट्रिक नैनोजेनरेटर (टीईएनजी) तकनीक कहते हैं। ट्राइबोइलेक्ट्रिक नैनोजेनरेटर बिजली उत्पन्न करने के लिए अलग-अलग रूपों में हर जगह मौजूद कंपन के रूप में यांत्रिक ऊर्जा का उपयोग करते हैं। ऊर्जा संचयन के लिए टीईएनजी दो असमान सामग्रियों के तुरंत संपर्क के माध्यम से इलेक्ट्रोस्टैटिक चार्ज के निर्माण के सिद्धांत पर काम करता है।

भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के तहत एक स्वायत्त संस्थान, सेंटर फॉर नैनो एंड सॉफ्ट मैटर साइंसेज, बेंगलुरु के डॉ शंकर राव और उनकी टीम ने थर्मोप्लास्टिक पॉलीयूरेथेन (टीपीयू) का उपयोग करके एक पारदर्शी टीएनजी तैयार किया है। यह उपकरण अत्यधिक क्षमता वाला और मजबूत है। संचालन के दौरान लंबे समय तक यह बहुत अच्छा काम करता है। यह उपकरण ग्यारह एलईडी बल्बों को रोशन कर सकता है और इसका उपयोग अपने आप चलने वाले उपकरणों और अन्य जैव चिकित्सा में किया जा सकता है। **डीटीई**

छत्तीसगढ़ का मशरूम है फुटू

देवाशीष राय

बस्तर (छत्तीसगढ़) में शुरुआती बारिश के दिनों में ग्रामीणजनों की आय और सेहत का एक मुख्य स्त्रोत होता है फुटू। दरअसल फुटू एक मशरूम है। बारिश के मौसम में जंगलों में फुटू की अनेक वेराइटी उग आती है। सारे फुटू खाने लायक नही होते हैं लेकिन स्थानीय आदिवासियों को पीढ़ी दर पीढ़ी मिले पारंपरिक ज्ञान से जानकारी हो जाती है कि किस फुटू को खाया जा सकता है और किसे नहीं। ऐसा माना जाता है कि सबसे स्वादिष्ट फुटू 'नाग फुटू' होता है जो दीमक की बाम्बी के पास बहुतायत में निकलता है। मौजूदा तस्वीर फुटू की एक वैरायटी 'जाम फुटू' की है यह स्वादिष्ट होने के साथ साथ एंटीऑक्सीडेंट और प्रोटीन से भरपूर होते हैं। बस्तर के स्थानीय हाट में इन फुटू बिकते दिख जायेगा। यह झारखंड के रूगड़ा और मशरूम की तरह ही है। जैसे हम झारखंडी सावन में इसका लुत्फ उठाते हैं वैसे ही स्वादिष्ट फुटू वहां बरसात में बहुतायत में मिलता है।

लाइकेन की उपस्थिति ? यानि रांची आस पास की हवा है शुद्ध

डॉ. नितिश प्रियदर्शी

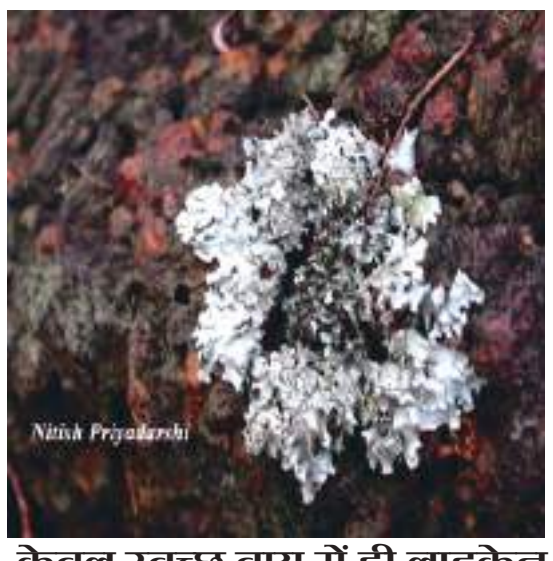

केवल स्वच्छ वायु में ही लाइकेन की प्रचुर वृद्धि हो पाती है

रांची के आस पास की हवा है प्रदुषण मुक्त है। इसका सबूत है रांची के आस पास तथा जंगलों में मौजूद लाइकेन। यहां सारे चित्र रांची के टाटीसिलवे , ओरमांझी, होरहाब और पतरातू घाटी के जंगल के हैं। ये पेड़ों पे तथा चट्टानों पे मिलते हैं। बहुत पहले ये रांची शहर में भी दिखते थे। लेकिन बढ़ती आबादी एवं बढ़ते वायु प्रदुषण की वजह से रांची शहर से लाइकेन गायब हो गए। लाइकेन (Lichen) निम्न श्रेणी की ऐसी छोटी वनस्पतियों का एक समूह है, जो विभिन्न प्रकार के आधारों पर उगे हुए पाए जाते हैं। इन आधारों में वृक्षों की पत्तियाँ एवं छाल, प्राचीन दीवारें, भूतल, चट्टान और शिलाएँ मुख्य हैं।

लाइकेन को स्वच्छ हवा की जरुरत होती है। ये प्रदुषण को बर्दाश्त नही कर पाते है। लाइकेन कार्बन डाइऑक्साइड और भारी धातुओं सहित हवा से सब कुछ अवशोषित करते हैं। वैज्ञानिक लाइकेन की मदद से क्षेत्र में वायु प्रदूषण के स्तर को निर्धारित कर सकते हैं और अगर किसी एक साइट पर लाइकेन मर रहे हो तो इसे प्रारंभिक चेतावनी या संकेत समझा जा सकता है कि उस जगह पर प्रदुषण का स्तर बढ़ रहा है। अगर देखा जाए तो तितली , मेढक की उपस्थिति भी प्रदुषण मुक्त वातावरण को दर्शाते हैं। लाइकेन को प्रभावित करने वाले मुख्य कारक हैं हवा में मौजूद नाइट्रोजन डाइऑक्साइड , सल्फर डाइऑक्साइड , फ्लोराइड , ओजोन, हाइड्रोकार्बन्स, कॉपर , लीड और जिंक। जहाँ भी इनकी वृद्धि होगी वहाँ से लाइकेन गायब हो जायेगा। अगर टहलते हुए आपको लाइकेन के दर्शन हो जाए तो समझ लीजिये की आप प्रदुषण मुक्त वातावरण में हैं।

ये बड़े शहरों के पास कभी नहीं उग पाते, क्योंकि नगरों के आस पास के कारखानों का धुँआ तथा अन्य गैस आदि इनके लिए घातक हैं। ये वायु की स्वच्छता पर विशेष निर्भर करते हैं। केवल स्वच्छ वायु में ही लाइकेन की प्रचुर वृद्धि हो पाती है। लाइकेनों में विद्धमान लाइकेनिन व अन्य रसायनिक पदार्थों को दवाइयों के रूप में प्रयोग किया जाता है। क्या आप जानते है कि perfumes भी लाइकेन से बनती हैं, जैसे कि रैमेलाइना से। ऐसा कहना गलत नहीं होगा की लाइकेन ऐसा जीव है जो कि वातावरण के लिए महत्वपूर्ण है और इसका आर्थिक महत्व भी है।

ग्रीन रिवोल्ट
हरित-नीरा रहे वसुंधरा

मॉनसून का अनसुलझा रहस्य

कोई कितने भी आंकड़े जुटा ले, उपग्रह से देख ले, पुराने नये सूचनाओं का सार निकाल ले, पर भारतीय मॉनसून आज भी अक्सर सबको छका देता है। इस वर्ष जून में भरपूर बारिश हुयी और कहा गया कि मॉनसून बिल्कुल ही समय पर आया है और देश में कृषि को बहुत लाभ होगा, पर जून में अपनी उपस्थिति दर्ज करा कर मॉनसून कई इलाकों में अब सुस्त है।अब वैज्ञानिक से लेकर जानकार तरह तरह की बातें बता रहे हैं।

भारत में कृषि को मॉनसून के साथ जुआ कहा गया है। यही कारण है कि यहां का साहित्य भी किसान के बारे में , मॉनसून, बारिश के देवता इंद्र के बारे में रचा जाता है। किस वर्ष मॉनसून दगा दे जाये किस वर्ष कम बारिश के भविष्यवाणियों को दगा देकर बरस जाये इसका कोई ठिक नहीं।

इस वर्ष भी जून में अपने सही समय पर आगमन के बाद देश के कुछ इलाकों में मॉनसून थम सा गया है। मौसम वैज्ञानिकों का कहना है कि इस वर्ष समय पर अच्छी बारिश हो सकती है? हम उम्मीद ही कर सकते हैं कि इतने आधुनिक उपकरणों, उपग्रहों, कंप्यूटरों से गणना की भविष्यवाणी सही निकले और किसानों के चेहरे पर मुस्कान हो।

आखिर इतनी तरक्की के बाद भी देश में कृषि इंद्र की कृपा पर ही निर्भर है और अच्छी बारिश के बाद अखबारों, पत्रिकाओं तक में छपता है कि इंद्र की कृपा से दिन बहुरे।

भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने बुलेटिन के माध्यम से बताया है कि दक्षिण-पश्चिम मानसून के राजस्थान, पश्चिम उत्तर प्रदेश, हरियाणा, चंडीगढ़, दिल्ली और पंजाब के बचे हुए भागों में आगे बढ़ने की रफ्तार कमजोर पड़ गई है। आईएमडी ने बताया कि बड़े पैमाने पर परिस्थितियां अनुकूल नहीं होने के चलते ऐसा देखा जा रहा है। मॉडल से लगाए गए पूर्वानुमानों के हिसाब से इन इलाकों के लिए हवाओं का पैटर्न भी वर्षा के लिए अनुकूल स्थिति होने का संकेत नहीं दे रहा है। झारखंड और सीमावर्ती इलाकों में एक चक्रवाती परिसंचरण हो रहा है जो ऊपर मध्य ट्रोपोस्फेरिक स्तरों तक फैला हुआ है। इसके अगले दिनों के दौरान उसी क्षेत्र में घूमने के आसार बन रहे हैं। इसके प्रभाव के चलते, अगले कुछेक दिनों के दौरान पूर्वी और आसपास के मध्य भारत - बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़, ओडिशा और पूर्वी मध्य प्रदेश के अधिकांश हिस्सों में बिजली गिरने और बौछारें पड़ने के साथ-साथ भारी बारिश होने का अनुमान है। अगले 24 घंटों के दौरान बिहार में भी भारी बारिश की संभावना है।

ये भविष्यवाणियां कितनी सच होंगी यह तो अगले कुछ दिनों में पता चलेगा, पर इतना तय है कि भारतीय मॉनसून बड़ा ही अनिश्चित है।

पर्यावरण मुद्दे पर नीति आयोग के तरीके से बढ़ी उलझन

कुंदन पाण्डेय

●हर साल की तरह इस साल भी नीति आयोग ने विभिन्न सतत विकास लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए देश के राज्यों की रैंकिंग की है। इसमें भूख, शिक्षा और स्वास्थ्य, गरीबी इत्यादि के आकड़ों के आधार पर राज्यों की रैंकिंग की गयी है।

●इन लक्ष्यों के अलावा, नीति आयोग की एसडीजी रैंकिंग में आज के समय के अन्य महत्वपूर्ण मुद्दों भी शामिल हैं। जैसे, जलवायु कार्रवाई, लोगों के लिए ऊर्जा की उपलब्धता, शहरों में जीवनस्तर को सुधारने की कोशिश इत्यादि। हालांकि रैंकिंग के मानकों के घालमेल से भ्रम की स्थिति बढ़ी ही है।

●2018 की अपनी पहली रिपोर्ट की तुलना में नीति आयोग ने इस बार की रिपोर्ट में कई संकेतक बदल दिए या हटा दिए हैं। जैसे 2018 में प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत घरों की मांग और आपूर्ति का इस्तेमाल किया था पर 2021 की रिपोर्ट में इसका जिक्र तक नहीं है। इससे रैंकिंग पर भी सवालिया निशान खड़ा होता है।

कम से कम 12 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में इक्स्ट्रीम वेदर ईवेंट जैसे बाढ़, लू, बिजली गिरने इत्यादि से या तो कोई मौत हुई नहीं है या इन राज्यों में इन मौतों की गिनती के लिए कोई व्यवस्था नहीं है। हाल ही में आई नीति आयोग की रिपोर्ट से यही बात निकलती है जबकि केंद्र सरकार के अपने आंकड़े बताते हैं कि बिहार, गोवा या झारखंड में ऐसी कई मौतें हुई हैं। ये वही राज्य हैं जिन्होंने नीति आयोग के हालिया रिपोर्ट में मौसम की मार से एक भी मौत दर्ज नहीं किया है।

सतत विकास लक्ष्य के हिसाब से राज्यों की प्रगति के हिसाब से रैंकिंग करने वाली नीति आयोग की सालाना रिपोर्ट की यह एक झलकी है। वर्ष 2015 में, संयुक्त राष्ट्र ने सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) को अपनाया था। आम आदमी के जीवन स्तर को सुधारने के हिसाब से ये 17 लक्ष्य 2030 तक हासिल कर लिए जाने हैं। इन लक्ष्यों में गरीबी उन्मूलन, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा को लोगों तक पहुंचाना, असमानता को कम करना इत्यादि शामिल है। इनमें आज के समय की कुछ बड़ी चिंताओं को भी शामिल किया गया है, जैसे जलवायु परिवर्तन से निपटने की कोशिश इत्यादि। कुल 17 में से सात लक्ष्य ऐसे हैं जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जलवायु परिवर्तन से निपटने की कोशिश करते हुए दिखते हैं। इनमें जल जीवन, वन और हरियाली, ऊर्जा की उपलब्धता इत्यादि शामिल है।

इस रिपोर्ट की कुछ खास बातें

एसडीजी का लक्ष्य-6 'स्वच्छ पानी और स्वच्छता' की बात करता है। इसके तहत सभी लोगों के लिए पीने के स्वच्छ पानी सुनिश्चित करने का लक्ष्य रखा गया है। इस लक्ष्य के आकलन के लिए कुल आठ संकेतकों का उपयोग किया गया है। नीति आयोग की रिपोर्ट में बताया गया है कि देश के केवल 88.40% उद्योग ही केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के मानदंडों के अनुसार अपशिष्ट जल का उपचार करते हैं। इस श्रेणी में दिल्ली का स्तर सबसे खराब है जहां महज 53.44 फीसदी उद्योग ही इस मानक का पालन कर रहे हैं।असम (74.72%), त्रिपुरा (84.84%) जैसे राज्यों को इस क्षेत्र में अभी बहुत काम करने की जरूरत है। इस रिपोर्ट में यह भी स्पष्ट किया गया है कि केवल 51 प्रतिशत ग्रामीण आबादी को ही पाइप से पेयजल की आपूर्ति की जाती है। लक्ष्य-7 सस्ते और स्वच्छ ऊर्जा की बात करता है। इस लक्ष्य में सभी के लिए सस्ती, स्थायी और आधुनिक ऊर्जा को लोगों के लिए सुलभ बनाना है। इसके आकलन के लिए, नीति आयोग ने दो राष्ट्रीय स्तर के संकेतकों को चुना है। इसमें घरों में बिजली कनेक्शन उपलब्ध कराना और एलपीजी+ पीएनजी कनेक्शन उपलब्ध कराना शामिल है। आयोग ने 21 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को 100 अंक दिए हैं। हालांकि इन दो लक्ष्यों से सस्ती, स्थायी और आधुनिक ऊर्जा के सुलभ होने का पता नहीं चलता है।

लक्ष्य-11 में शहरों और वहां रहने वाले समुदायों के जीवन स्तर के बारे में बात की गयी है। इसमें से एक है ड्रेनेज की सुविधा। इस मानदंड पर, पूर्वोत्तर राज्य जैसे अरुणाचल प्रदेश (59.4%), नागालैंड (59.5%), मिजोरम (52%) राष्ट्रीय औसत 87.6 (%) से काफी पीछे हैं। लक्ष्य की निगरानी के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक अन्य महत्वपूर्ण संकेतक है कुल सीवेज से निकलने वाले कचरे के अनुपात में कचरा-उपचार की कुल क्षमता। राष्ट्रीय स्तर पर पूरे देश को महज 38.86 अंक मिले हैं।

लक्ष्य-12 में खपत और उत्पादन को पर्यावरण के हित में बनाने की बात की गयी है। जिनमें प्रति व्यक्ति जीवाश्म ईंधन की खपत, प्रति 1,000 आबादी पर उत्पन्न होने वाला प्लास्टिक कचरा, बायो मेडिकल वेस्ट (बीएमडब्ल्यू) के निष्पादन को शामिल किया गया है। जब पूरी दुनिया महामारी का सामना कर रही है और बीएमडब्ल्यू एक गंभीर चिंता का विषय है, यह जानना दिलचस्प है कि बिहार और छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में बमुश्किल 25 प्रतिशत ऐसे कचरे का ही सही से निष्पादन हो पाता है।लक्ष्य-13 में जलवायु से जुड़ी कार्रवाई की बात की गयी है। नीति आयोग ने इस मानदंड पर राज्यों को रैंक करने के लिए पांच संकेतकों का उपयोग किया है। दिलचस्प बात यह है कि बिहार को यहां महज 16 (100 में से) अंक मिले हैं। यह राज्य पिछले कुछ वर्षों में जलवायु परिवर्तन से लड़ने के अपने प्रयासों के बारे में जोर शोर से चर्चा करता रहा है। इस राज्य में एक जलवायु परिवर्तन प्रभाग की स्थापना भी की गयी है। इतने हो हल्ला के बावजूद भी राज्य मौसम की मार से होने वाली मौतों की गिनती के लिए एक तंत्र नहीं विकसित कर पाया है। नीति आयोग की रिपोर्ट में यह बताया गया है। जबकि केंद्र सरकार का अपना रिकॉर्ड बताता है कि 2019 में मौसम की मार की वजह से 690 लोगों की जान गयी है।

एसडीजी-14 में 'जल जीवन' के स्तर की बात की गयी है। इसके लिए नीति आयोग ने केवल नौ राज्यों को ही रैंकिंग में शामिल किया है जो समुद्र तट पर स्थित हैं। इनमें से तमिलनाडु का स्कोर सिर्फ 11 है। आयोग ने राज्यों को रैंक करने के लिए पांच संकेतकों का इस्तेमाल किया है। इसमें मैंग्रोव क्षेत्र की वृद्धि शामिल है। इस मानदंड पर तमिलनाडु ने नकारात्मक स्कोर किया है जबकि महाराष्ट्र में सबसे अधिक वृद्धि देखी गई है।

एसडीजी-15 में जमीन पर जीवन स्तर की बात की गयी है। इसमें पारिस्थितिक तंत्र के सही उपयोग, जंगलों का स्थायी प्रबंधन, मरुस्थलीकरण को कम करना, भूमि क्षरण को रोकना और जैव-विविधता के नुकसान को रोकना इत्यादि शामिल है। नीति आयोग ने राज्यों की रैंकिंग के लिए कुल छह मानदंडों का इस्तेमाल किया है। इसमें कुल भौगोलिक क्षेत्र में वन-क्षेत्र का प्रतिशत, कुल भौगोलिक क्षेत्र के प्रतिशत के रूप में वृक्षारोपण, मरुस्थलीकरण के क्षेत्र में प्रतिशत वृद्धि और वन्यजीवों से जुड़े दर्ज मामले को शामिल किया गया है। इस लक्ष्य को हासिल करने में हरियाणा, मिजोरम, पंजाब और राजस्थान ने सबसे खराब प्रदर्शन किया है।

संकेतक बदलने से स्थिति अस्पष्ट

दिलचस्प बात यह है कि नीति आयोग अपने एक संकेतक को कभी एक लक्ष्य के लिए तो कभी दूसरे लक्ष्य के लिए इस्तेमाल करता रहा है। उदाहरण के लिए, इसने 2018 की रिपोर्ट के दौरान लक्ष्य-6 में 'शहरी क्षेत्रों में निर्मित सीवेज के अनुपात के रूप में स्थापित सीवेज उपचार क्षमता' को शामिल किया था। वहीं 2021 की रिपोर्ट में इसे लक्ष्य-11 के लिए संकेतक के तौर पर इस्तेमाल किया गया है। खास बात यह है कि पिछले चार वर्षों में नीति आयोग की रिपोर्ट के अनुसार सीवेज उपचार क्षमता में कोई खास बढ़ोत्तरी नहीं हुई है।

इसी तरह 2018 की रिपोर्ट में, नीति आयोग ने किफायती और स्वच्छ ऊर्जा लक्ष्य (लक्ष्य-7) के आकलन के लिए कुल स्थापित ऊर्जा क्षमता में अक्षय ऊर्जा की हिस्सेदारी को एक संकेतक माना था। हालिया रिपोर्ट में इसे हटाकर लक्ष्य-13 (जलवायु कार्रवाई) के संकेतक के तौर पर इस्तेमाल किया गया है। एसडीजी-11 (सस्टेनेबल सिटीज एंड कम्युनिटीज) के तहत वर्ष 2018 में इस्तेमाल किये गए एक संकेतक को हटा ही दिया गया है। तीन साल पहले आए इस रिपोर्ट में प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत कितने जरूरतमंदों को घर उपलब्ध कराया गया, एक संकेतक था। और देश को 100 में 3.32 अंक मिले। हालिया रिपोर्ट में इस संकेतक को हटा ही दिया गया है। हर साल के रिपोर्ट में संकेतक बदलने या मानदंड के बदलते जाने से एसडीजी को लेकर नीति आयोग का स्पष्ट समझ बनाने का लक्ष्य ही हासिल नहीं हो पा रहा है।

अब वातावरण की नमी से दूर होगी पानी की कमी

दयानिधि

यह नई तकनीक बिना किसी ऊर्जा के हर दिन कम से कम दो बार पानी का उत्पादन कर सकती है

दुनिया के कई हिस्सों में पीने के पानी की कमी है और इस कमी को दूर करने के लिए उचित कदम उठाए जाने की आवश्यकता है। समुद्र के पास रहने वाले लोग पानी की जरूरत को पूरा करने के लिए समुद्र के पानी से खारेपन को हटा सकते हैं, लेकिन ऐसा करने के लिए बड़ी मात्रा में ऊर्जा की आवश्यकता होती है। तट से दूर रहने वाले लोग एक विकल्प जिसमें वायुमंडलीय नमी को ठंडा करके पानी में बदलकर इसका उपयोग कर सकते हैं।

ऐसे तरीकों को अपनाया जा सकता है जिससे पानी की कमी को दूर किया जा सके, लेकिन इसके लिए भी अधिक ऊर्जा की आवश्यकता होती है। सबसे अच्छा है "निष्क्रिय" तकनीकों का उपयोग करना अर्थात जिसमें बाहर से किसी तरह की ऊर्जा की जरुरत नहीं होती है। यह दिन और रात के बीच बदलते तापमान का फायदा उठाता है। हालांकि, वर्तमान निष्क्रिय तकनीकों में, जैसे ओस-इकट्ठा करने वाली पन्नी, इसकी मदद से पानी को केवल रात में ही निकाला जा सकता है। दिन में सूरज इस पन्नी को गर्म कर देता है, जिससे पानी इकट्ठा करना असंभव हो जाता है। ज्यूरिख में स्विस फेडरल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के शोधकर्ताओं ने अब एक ऐसी तकनीक विकसित की है, जो पहली बार उन्हें चौबीसों घंटे बिना किसी ऊर्जा के, यहां तक कि तेज धूप में भी पानी इकट्ठा करने में सफल बनाती है। इस नए उपकरण में एक कांच की परत होती है, जो वातावरण के माध्यम से बाहरी गर्मी को दूर करती है। इस प्रकार यह अपने आप को वातावरण के तापमान से 15 डिग्री सेल्सियस तक ठंडा कर लेता है। इस कांच से बनी परत जिसे फलक कहते हैं, इसके नीचे, हवा से जल वाष्प ठंडा होकर पानी में बदल जाता है। प्रक्रिया वही है जो सर्दियों के दौरान खराब इन्सुलेटेड खिड़कियों पर देखी जा सकती है। वैज्ञानिकों ने कांच पर विशेष रूप से डिजाइन किए गए पॉलीमर और चांदी की परतें चढ़ाई। यह विशेष कोटिंग पॉलीमर को एक विशिष्ट तरंग दैर्ध्य पर बाहरी वातावरण में विकिरण का उत्सर्जन करने में सफल बनता है, जिसमें न तो वातावरण द्वारा अवशोषण होता है और न ही पॉलीमर पर प्रतिबिंब वापस आता है। उपकरण का एक अन्य प्रमुख तत्व एक शंकु के आकार की तरह होता है जो गर्मी को बाहर की और ढकेल देता है। इससे काफी हद तक वायुमंडल से गर्मी वापस चली जाती है। नमी पॉलीमर की ढाल पर आ जाती है, उपकरण के गर्मी को बाहर की ओर धकेलने से यह पूरी तरह बिना ऊर्जा के स्वयं को ठंडा करता है।

एक भवन की छत पर में लगे नए उपकरण के परीक्षण से पता चलता है, कि नई तकनीक प्रतिदिन कम से कम दो बार पानी का उत्पादन कर सकती है। जो कि बिना ऊर्जा अथवा निष्क्रिय तकनीक के आधार पर काम करती हैं। छोटे 10 सेंटीमीटर व्यास के पॉलीमर वाली प्रणाली ने वास्तविक दुनिया की परिस्थितियों में प्रति दिन 4.6 मिलीलीटर पानी का उत्पादन किया। बड़े पैन वाले बड़े उपकरण तदनुसार और अधिक पानी का उत्पादन करेंगे।

वैज्ञानिक यह दिखाने में सफल रहे कि, आदर्श परिस्थितियों में वे प्रति वर्ग मीटर की सतह पर प्रति घंटे 0.53 डेसीलीटर पानी को इकट्ठा कर सकते हैं। यह अध्ययन साइंस एडवांस में प्रकाशित हुआ है। अन्य तकनीकों में आमतौर पर जहां पानी जमा होता है। उस सतह को पोंछ कर पानी को इकट्ठा करना पड़ता है, जिसके लिए ऊर्जा की जरुरत होती है। जमा पानी का अधिकतर हिस्सा सतह से चिपकने की वजह से इसका पूरी तरह से उपयोग नहीं हो पाता है। शोधकर्ताओं ने अपने पानी के कंडेनसर में फलक के नीचे एक नए सुपर हाइड्रोफोबिक कोटिंग का उपयोग किया है। जिससे पानी अपने आप इकट्ठा हो जाता है, इसे पोंछकर इकट्ठा करने की जरुरत नहीं पड़ेगी।

शोधकर्ताओं ने बताया कि उनका लक्ष्य पानी की कमी वाले देशों और विशेष रूप से विकासशील देशों के लिए एक तकनीक विकसित करना था। अन्य वैज्ञानिकों के पास पानी के उत्पादन को बढ़ाने के लिए इस तकनीक को और विकसित करने या पानी के खारेपन को दूर करने जैसी अन्य तकनीकों के साथ जोड़ कर इसे आगे बढ़ाने का अवसर है। इस तरीके से पानी का उत्पादन करना अपेक्षाकृत सरल है और मौजूदा छोटी प्रणाली के आधार पर इसे बड़ा रूप दिया जा सकता है।

प्लास्टिक में 10,500 केमिकल की पहचान, इनमें से 2,480 बेहद खतरनाक

प्लास्टिक में करीब 10,500 केमिकल की पहचान की है। जिनमें से 2,489 केमिकल का उपयोग पैकेजिंग, 2,429 का उपयोग वस्त्र बनाने, 2,109 उपयोग खाद्य प्रयोगों में किया जाता है। शोधकर्ताओंने पहली बार प्लास्टिक के उत्पादन और प्रसंस्करण में उपयोग किए जाने वाले प्लास्टिक मोनोमर जो कि एक तरह के पॉलीमर के अणु होते हैं, एडिटिव्स आदि का एक डेटाबेस तैयार किया है। उन्हें उपयोग के पैटर्न और खतरे की आशंका के आधार पर वर्गीकृत किया गया है। यह अध्ययन हमें प्लास्टिक में पाए जाने वाले केमिकल को लेकर जागरूक कर रहा है।

शोधकर्ताओं ने बताया कि उन्होंने प्लास्टिक में करीब 10,500 केमिकल की पहचान की है। जिनमें से 2,489 केमिकल का उपयोग पैकेजिंग, 2,429 का उपयोग वस्त्र बनाने, 2,109 उपयोग खाद्य प्रयोगों में किया जाता है। कुछ केमिकल 522 खिलौने बनाने और 247 केमिकल मास्क सहित चिकित्सा उपकरणों में उपयोग किए जाते हैं। पहचाने गए 10,500 पदार्थों में से, शोधकर्ताओं ने 2,480 पदार्थों लगभग 24 फीसदी को खतरनाक केमिकल के रूप में वर्गीकृत किया है। प्लास्टिक में इस्तेमाल होने वाले सभी रसायनों में से लगभग एक चौथाई या तो अत्यधिक स्थिर होते हैं, जीवों के पेट में जमा हो जाते हैं और ये बहुत जहरीले होते हैं। ये पदार्थ अक्सर पानी में रहने वाले जीवों के लिए जहरीले होते हैं। इनकी वजह से कैंसर रोग हो सकता है, या ये किसी विशिष्ट अंग को नुकसान पहुंचा सकते हैं।

लघु वनोपज संग्रहण से छत्तीसगढ़ में नहीं सुधरी आदिवासियों की स्थिति?

द ट्राइबल कोऑपरेटिव मार्केटिंग डेवलपमेंट फेडरेशन ऑफ इंडिया (ट्राईफेड)' द्वारा जारी किए गए आंकड़ों के अनुसार वर्तमान में देश में कुल संग्रहित लघु वनोपजों में से तीन चौथाई से अधिक अर्थात 75.38 प्रतिशत लघु वनोजपों का संग्रहण छत्तीसगढ़ में हुआ है। सरकार लगातार इस तरह के आंकड़े जारी करती है और दावा करती है कि इससे आदिवासियों की आर्थिक स्थिति सुधर रही है। हालांकि, इसी छत्तीसगढ़ के आदिवासियों को केंद्र में रख कर लघु वनोपज और आदिवासियों को लेकर किये जाने वाले इन्हीं दावों की पड़ताल करने पर कहानी कुछ और ही नजर आती है। अपने लोक-लुभावन वादों के बावजूद सरकार इन मुद्दों को लेकर कितनी सचेत है- इसकी बानगी देखिए। तेंदूपत्ता की क़ीमत 2500 रुपये से 4000 रुपये प्रति बोरी की गई लेकिन पिछले बीस सालों में सबसे कम ख़रीदी 2020-21 में हुई। आदिवासियों के लिए वनोपज संग्रहण को आय का बड़ा स्रोत माना जाता है लेकिन 2020-21 में छत्तीसगढ़ में प्रत्येक संग्रहकर्ता परिवार को महज साल भर में 3976 रुपये मिले।

सामाजिक संगठन चाहते हैं कि वनोपज ख़रीदी की क़ीमत को महंगाई सूचकांक से जोड़ा जाए।छत्तीसगढ़ के कोरबा ज़िले के पतुरियाडांड के सरपंच उमेश्वर सिंह आर्मो को उम्मीद नहीं है कि इस साल वनोपज संग्रहण का कोई लाभ गांव के लोगों को मिल पाएगा। इस साल जंगल में महुआ है नहीं और असमय होने वाली बारिश के कारण तेंदूपत्ता की तुड़ाई का काम भी प्रभावित हुआ है। यह छत्तीसगढ़ की कहानी है जहां वर्तमान में देश में कुल संग्रहित लघु वनोपजों में से तीन चौथाई से अधिक अर्थात 75.38 प्रतिशत लघु वनोजपों का संग्रहण हुआ है। लघु वनोपजों के संग्रहण को लेकर इस मॉडल स्टेट का अध्ययन किया जाए तो एक निराशाजनक तस्वीर उभरती है।

तंबाकू के सेवन से हर साल 105.4 लाख करोड़ रुपए का नुकसान

डब्लूएचओ द्वारा जारी तंबाकू टैक्स मैन्युअल से पता चला है कि दुनिया भर में तंबाकू के इस्तेमाल से हर साल करीब 105.4 लाख करोड़ रुपए (140,000 करोड़ डॉलर) का नुकसान हो रहा है। यह नुकसान तम्बाकू के कारण स्वास्थ्य पर किए जा रहे खर्च और उत्पादकता में आ रही गिरावट के कारण हो रहा है। इसके बावजूद दुनिया के केवल 38 देशों में तम्बाकू पर पर्याप्त कर लगाए हैं। करों का मतलब है कि इन देशों में स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाने वाले इन हानिकारक उत्पादों पर उनकी कीमत का करीब 75 फीसदी हिस्सा कर के रूप में था। हालांकि देखा जाए तो इन देशों में दुनिया की केवल 14 फीसदी आबादी रहती है। इसका मतलब है कि 86 फीसदी आबादी अभी भी पर्याप्त करों के दायरे से बाहर है। लेकिन सच्चाई यही है कि जब तक लोग अपने आप इसके सेवन को नहीं छोड़ते।

धरती पर पैदा होता है समुद्र, तटों को दूषित करने वाला 80 प्रतिशत प्रदूषण

जिस तरह से हम महासागरों का दोहन कर रहे हैं, वो अपने आप में एक बड़ी समस्या है यही नहीं बढ़ता प्रदूषण और जलवायु में आता बदलाव भी इनके लिए बड़ा खतरा है

समुद्र और तटों को दूषित करने वाल 80 फीसदी प्रदूषण जमीन पर उत्पन्न होता है। कृषि, मत्स्योद्योग, शिपिंग, खनन, पोर्ट, पर्यटन, तटों पर बढ़ता निर्माण जैसी गतिविधियां महासागरों और तटों के लिए समस्या पैदा कर रहे हैं। हालांकि इसके बावजूद शायद ही कहीं ऐसी कोई प्रभावी व्यवस्था है, जो भूमि और समुद्र के परस्पर प्रभाव का प्रबंधन करती हो। इस पर संयुक्त राष्ट्र के इंटरनेशनल रिसोर्स पैनल द्वारा जारी नई रिपोर्ट में भी चिंता जताई है और कहा है कि यदि इसमें जल्द परिवर्तन न किए गए तो उसके गंभीर परिणाम सामने आएंगें।

यह रिपोर्ट तटीय संसाधनों पर भूमि आधारित गतिविधियों के बढ़ते प्रभाव को कम करने में मदद करने के लिए नीति निर्माताओं को विकल्प प्रदान करती है। साथ ही महासागर-आधारित अर्थव्यवस्था में शाश्वत बदलाव का समर्थन करती है।

हमारी पृथ्वी का लगभग दो तिहाई हिस्सा समुद्र से ढंका है, जो न केवल पृथ्वी पर जीवन और मानव कल्याण का समर्थन करता है, साथ ही जलवायु को भी नियंत्रित करता है। महासागर हमें भोजन, पानी, ऊर्जा, कच्चा माल और सबसे महत्वपूर्ण जीवनदायिनी ऑक्सीजन प्रदान करते हैं। साथ ही यह न जाने कितने लोगों की जीविका का भी आधार हैं। इसके अनगिनत फायदों के बावजूद आज यह महासागर ऐसी स्थिति पर पहुंच चुके हैं जहां इनके भविष्य पर ही खतरा मंडराने लगा है। यदि बढ़ती आबादी को देखें तो 2030 तक वैश्विक आबादी 860 करोड़ होगी, जिसमें से 60 फीसदी शहरों में रह रही होगी। इतनी बढ़ी आबादी की जरूरतों को पूरा करने के लिए महासागरों पर निर्भरता और बढ़ जाएगी। देखा जाए तो आज विश्व की करीब 13 फीसदी आबादी तटों के पास रहती है। बढ़ती मांग के चलते समुद्रों के जरिए सामान का आवागमन पहले के मुकाबले काफी बढ़ जाएगा।

इसी तरह निर्माण उद्योग में भी 2030 तक करीब 85 फीसदी की वृद्धि हो जाएगी। जिसका असर समुद्रों पर भी पड़ेगा। ऊर्जा और स्मार्टफोन जैसी बढ़ती जरूरतों के लिए समुद्र की गहराई में बढ़ जाएगा खनन दुनिया में ऊर्जा की मांग भी 2040 तक करीब 30 फीसदी बढ़ जाएगी, जिसके कारण रिन्यूएबल एनर्जी की मांग में भी 60 फीसदी का इजाफा होगा, इसमें समुद्रों में उत्पन्न की जा रही ऊर्जा भी शामिल है। ऊर्जा और स्मार्ट फ़ोन जैसी जरूरतों को पूरा करने के लिए गहरे समुद्रों में खनन पहले के मुकाबले काफी बढ़ जाएगा। इसके साथ ही तटों के किनारे बढ़ते पर्यटन से भी प्रदूषण में इजाफा होगा। इसके कारण इनके द्वारा प्रदान की जाने वाली सभी महत्वपूर्ण सेवाएं बाधित हो जाएंगी जिसके भयावह परिणाम होंगे।

जिस तरह से हम इनका दोहन कर रहे हैं। वो अपने आप में एक बड़ी समस्या है। यही नहीं बढ़ता प्रदूषण और जलवायु में आता परिवर्तन भी इनके लिए बड़ा खतरा है। जो इनकी जैव विविधता को गंभीर नुकसान पहुंचा रहा है। जिस तरह से समुद्र के तापमान और अम्लीकरण में वृद्धि हो रही है उसके कारण समुद्री जीवन प्रवास करने को मजबूर हो जाएगा। साथ ही इससे तटों पर आने वाली बाढ़ और तूफान की घटनाओं में इजाफा हो जाएगा। यह चिंता शाश्वत विकास के लक्ष्यों में भी स्पष्ट दिखती है यही वजह है की इसे एसडीजी-14 में स्पष्ट किया गया है जिसमें समुद्री पर्यावरण और संसाधनों के सतत उपयोग को प्राप्त करने का लक्ष्य रखा गया है। एसडीजी 14 के अंतर्गत 2025 तक सभी प्रकार के समुद्री प्रदूषण को 'रोकना और उसमें कमी करना शामिल है, विशेष तौर पर भूमि आधारित गतिविधियों से होने वाले प्रदूषण, जिसमें समुद्री मलबा और पोषक तत्वों से जुड़ा प्रदूषण शामिल है।

इस रिपोर्ट से जुड़े प्रमुख शोधकर्ता स्टीव फ्लेचर के अनुसार, इसमें कोई संदेह नहीं है कि हमारे महासागरों का भविष्य खतरे में है। यह एक वैश्विक मुद्दा है ऐसे में यदि हम अलग-अलग कार्रवाही करते हैं तो वो उतना प्रभावी नहीं होगा। इसके लिए हमें व्यवस्थित बदलाव करने होंगे, जिसमें अलग-अलग देशों की सरकारों, समुदायों और व्यापार को साथ मिलकर सामूहिक कार्रवाई करनी होगी। साभार : डीटीइ

भारत के 91 फीसदी कोयला संयंत्रों के संचालन से सस्ती है सौर और पवन ऊर्जा

यदि इस कोयला आधारित क्षमता को सौर और पवन ऊर्जा से बदल दिया जाए तो उससे देश को हर साल करीब 47,468 करोड़ रुपए की बचत होगी

भारत की मौजूदा 91 फीसदी कोयला आधारित बिजली क्षमता को चलाने की लागत नई सौर और पवन ऊर्जा की लागत से महंगी है, जिसकी कुल उत्पादन क्षमता करीब 193 गीगावाट है। ऐसे में यदि इस कोयला आधारित क्षमता को सौर और पवन ऊर्जा से बदल दिया जाए तो उससे देश को हर साल करीब 47,468 करोड़ रुपए की बचत होगी।

यही नहीं इससे 676 टेरावाट घंटे कोयला उत्पादन में भी कमी आएगी। यह देश में बढ़ते वायु प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन के खिलाफ चल रही जंग में भी मददगार होगा क्योंकि इससे हर वर्ष उत्सर्जित हो रही कार्बन डाइऑक्साइड में 64.3 करोड़ टन की गिरावट आएगी। इससे लोगों का स्वास्थ्य भी बेहतर होगा। यह जानकारी इंटरनेशनल रिन्यूएबल एनर्जी एजेंसी द्वारा जारी रिपोर्ट रिन्यूएबल पावर जेनेरेशन कॉस्टस इन 2020 में सामने आई है। गौरतलब है कि 2021 में नीलामी और बिजली समझौतों के अनुसार देश में सौर ऊर्जा की प्रति किलोवाट-घंटा की औसत कीमत 2.45 रुपए और पवन ऊर्जा की कीमत 2.37 रुपए प्रति किलोवाट-घंटा थी। पिछले कुछ वर्षों में जिस तरह सोलर और विंड क्षेत्र में तकनीकों और स्थापना में आने वाले खर्च में कमी आई है उसका असर इसकी कीमतों पर भी पड़ा है।

यदि देखा जाए तो वैश्विक स्तर पर 2010 में पवन ऊर्जा को स्थापित करने की लागत प्रति किलोवाट क्षमता के लिए 1,971 डॉलर थी जो 2020 में घटकर 1,355 डॉलर पर पहुंच गई है। वहीं भारत में यह 1,038 डॉलर प्रति किलोवाट है। वहीं इसी अवधि में वैश्विक स्तर पर सौर ऊर्जा प्लांट स्थापित करने की कीमत में करीब 81 फीसदी की गिरावट आई है जो 2010 में 4,731 डॉलर प्रति किलोवाट से घटकर 2020 में 883 डॉलर प्रति किलोवाट रह गई है।

जलवायु संकट के सवाल पर बिहार को क्यों सौ में सिर्फ 16 नंबर मिले?

पुष्यमित्र

नीति आयोग की हालिया रिपोर्ट में बिहार सरकार के प्रयासों को क्लाइमेट एक्शन के संदर्भ में विफल बताया गया। बिगड़े मौसम की वजह से आने वाली आपदाओं का मुकाबला करने और हरित ऊर्जा को बढ़ावा देने में राज्य के प्रयास कारगर नहीं।जबकि कभी बिहार से ही अलग होकर स्वतंत्र राज्य बने और जलवायु परिवर्तन और आपदाओं के मामले में बिहार से भी अधिक संवेदनशील राज्य ओडिशा को सौ में 70 अंक देकर पहले स्थान पर रखा गया है। विशेषज्ञ मानते हैं कि सरकार को डिनायल मोड से बाहर निकलने, मिशन मोड में काम करने और वैकल्पिक ऊर्जा के साधनों को अपनाने के साथ, इस मसले पर समाज के वंचित समुदाय को भागीदार बनाने की भी जरूरत है।

नीति आयोग की सतत विकास लक्ष्य से जुड़ी रिपोर्ट में बिहार के इस बार भी सबसे आखिरी पायदान पर होने की खबर तो चर्चा में है ही, इस रिपोर्ट की सबसे चौंकाने वाली सूचना यह है कि राज्य क्लाइमेट एक्शन नामक एसडीजी 13 के इंडेक्स में भी न सिर्फ आखिरी स्थान पर है, बल्कि उसे सौ में सिर्फ 16 अंक मिले हैं।

लोगों को यह खबर हैरतअंगेज इसलिए भी लग रही है, क्योंकि पिछले कुछ वर्षों से सरकार लगातार यह दावा कर रही है कि वह पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन के खतरों को समझ रही है और गंभीरता से उस पर काम कर रही है। मगर बिहार सरकार के उन प्रयासों को नीति आयोग ने लगभग पूरी तरह खारिज कर दिया है, तभी उसे सौ में सिर्फ 16 अंक मिले हैं, जबकि कभी बिहार से ही अलग होकर स्वतंत्र राज्य बने और जलवायु परिवर्तन और आपदाओं के मामले में बिहार से भी अधिक संवेदनशील राज्य ओडिशा को सौ में 70 अंक देकर पहले स्थान पर रखा है। कभी बीमारू राज्यों में गिनती पाने वाला ओडिशा प्रांत जो अक्सर समुद्री तूफानों की चपेट में आ जाता है, ने आपदाओं का सामना करने की अपनी क्षमता बढ़ाकर, स्वास्थ्य सुविधाओं को बेहतर बनाकर और हरित ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा देकर इस लक्ष्य में एक झटके में बढ़त हासिल कर ली। पिछले साल वह 15वें स्थान पर था। मगर इसके उलट बिहार में घोषणाएं और दावे तो बहुत हुए मगर संभवतः उन पर ठीक से अमल नहीं हुआ।

जलवायु परिवर्तन के मसले पर काम करने के बिहार सरकार के दावे

दिलचस्प है कि बिहार देश का पहला राज्य है जिसने अपने एक विभाग के नाम में जलवायु परिवर्तन को जोड़ा है। राज्य का वन एवं पर्यावरण विभाग काफी अरसे से

वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन विभाग के नाम से जाना जाता है। 2019 में बिहार सरकार ने इस विभाग के अंतर्गत जलवायु परिवर्तन डिवीजन का भी गठन किया, जिसका काम था जलवायु परिवर्तन से निबटने के लिए एक्शन प्लान तैयार करना और उसे प्रभावी तरीके से लागू करना। हालांकि दो साल बीत जाने पर भी राज्य सरकार जलवायु परिवर्तन को लेकर अपना एक्शन प्लान तैयार नहीं कर पायी है। पहले यह काम ब्रिटिश सरकार की डिपार्टमेन्ट फॉर इंटरनेशनल डेवलपमेंट (डीएफआईडी) द्वारा तैयार कराया जा रहा था, अब इसकी जिम्मेदारी यूएन (संयुक्त राष्ट्र) एनवायरमेंट प्रोग्राम को दी गयी है।

नवंबर, 2019 में सरकार ने जलवायु संकट का सामना करने में सक्षम नये फसल चक्र की शुरुआत की। सरकार का दावा है कि इस नये फसल चक्र को अपनाकर राज्य के किसान जलवायु संकट का सामना कर पाने में सक्षम होंगे और मौसम के अप्रत्याशित बदलाव से सुरक्षित रहेंगे। हालांकि इस कार्यक्रम में अब तक मुख्यतः कृषि उपकरणों को बढ़ावा देने की प्रक्रिया ही अपनायी गयी है।

साल 2019 में ही राज्य सरकार ने जल, जीवन हरियाली मिशन की शुरुआत की थी। इसके लिए 24,524 करोड़ का फंड निर्धारित किया गया है। इसके तहत बड़े पैमाने पर पौधरोपण, तालाबों और कुओं का जीर्णोद्धार किया जाना है। हालांकि इस मिशन को अब तक किसी कार्य में अपेक्षित सफलता नहीं मिली है। नवंबर, 2019 में सरकार ने जलवायु संकट का सामना करने में सक्षम नये फसल चक्र की शुरुआत की। सरकार का दावा है कि इस नये फसल चक्र को अपनाकर राज्य के किसान जलवायु संकट का सामना कर पाने में सक्षम होंगे और मौसम के अप्रत्याशित बदलाव से सुरक्षित रहेंगे। 2019 में सरकार ने जलवायु संकट का सामना करने में सक्षम नये फसल चक्र की शुरुआत की। सरकार का दावा है कि इस नये फसल चक्र को अपनाकर राज्य के किसान जलवायु संकट का सामना कर पाने में सक्षम होंगे और मौसम के अप्रत्याशित बदलाव से सुरक्षित रहेंगे। इस साल सरकार ने पर्यावरण दिवस के मौके पर दावा किया कि राज्य द्वारा बड़े पैमाने पर कराये गये पौधरोपण अभियान की वजह से बिहार का हरित आवरण नौ फीसदी से बढ़ कर 16 फीसदी हो गया है। हालांकि जानकार लोगों का मानना है कि पौधरोपण के कार्य में जमीनी स्तर पर काफी अनियमितता देखी गयी और इन्हें सुरक्षित रखने के भी उपाय नहीं किये गये।हालांकि नीति आयोग की रिपोर्ट बिहार सरकार के इन दावों को सिरे से खारिज करती नजर आ रही है।

पांच मानकों के आधार पर जारी हुई है नीति आयोग की रिपोर्ट

नीति आयोग की इस रिपोर्ट में क्लाइमेट एक्शन वाले खंड में जिन पांच मानकों के आधार पर यह रैंकिंग तैयार की गयी है, उनमें मौसम के बिगड़ जाने की स्थिति में प्रति एक करोड़ में होने वाली मौत, आपदा की तैयारी, कुल ऊर्जा उत्पादन के अनुपात में वैकल्पिक ऊर्जा का उत्पादन, एलईडी बल्ब का इस्तेमाल और बीमारी और अन्य वजहों से हुई जीवन क्षति को रखा है। मौसम के बिगड़ जाने की स्थिति में प्रति एक करोड़ में होने वाली मौत के मामले में तो बिहार के आंकड़े ही उपलब्ध नहीं हैं, मगर यह समझा जा सकता है कि सिर्फ बाढ़ से बिहार में 2019 में 300 इंसानों की मौत हुई थी, बज्रपात से 216 लोगों की और हीट वेब (लू) से 292 लोगों की मौत हुई। शीतलहर और अन्य वजहों को छोड़ भी दिया जाये तो सिर्फ इन्हीं आंकड़ों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि लगभग 13 करोड़ की आबादी वाले राज्य में मौसम बिगड़ने से प्रति एक करोड़ 60 से अधिक लोगों की मौतें होती हैं। जबकि इस मानक में राष्ट्रीय औसत 15.44 है, इसे 2030 तक शून्य तक ले जाने का लक्ष्य है। आपदाओं का मुकाबला करने की तैयारी के मामले में बिहार को 19.5 अंक मिले हैं, जो लगभग राष्ट्रीय औसत 19.2 के बराबर है। इसे 2030 तक 50 अंक तक ले जाने का लक्ष्य है।

कुल ऊर्जा उत्पादन के अनुपात में वैकल्पिक ऊर्जा के उत्पादन के मामले में बिहार 40 फीसदी के लक्ष्य के मुकाबले सिर्फ 7.9 फीसदी हासिल कर पाया है। उसे अपने टारगेट को हासिल करने के लिए दूसरे राज्यों से हरित बिजली को खरीदना पड़ता है। इस बारे में विस्तार से यहां पढ़ सकते हैं। प्रति एक हजार की आबादी पर एलईडी बल्ब के इस्तेमाल में भी बिहार काफी पीछे है। राष्ट्रीय औसत 28.24 के मुकाबले बिहार में यह संख्या सिर्फ 16.65 है। बिहार के कई जिलों में बाढ़, आंधी तूफान, बज्रपात आदि आपदाएं यहां नियमित हैं। डिसेबिलिटी एडजस्टेड लाइफ ईयर (डेली) यानी बीमारी और अन्य वजहों से जीवन अवधि की क्षति के मामले में भी बिहार की रैंकिंग काफी कमजोर है। यानी गंभीर बीमारियों और अन्य वजहों से बिहार में प्रति एक लाख की आबादी में 4308 लोग प्रभावित होते हैं, जबकि राष्ट्रीय औसत 3469 है और एसडीजी का लक्ष्य इसे 1442 तक ले जाना है।

जाहिर है कि इन आंकड़ों को देखकर सहज ही समझ आता है कि जलवायु संकट का मुकाबला करने की दिशा में बिहार सरकार ने फोकस्ड काम नहीं किया। जिस वजह से नीति आयोग ने उसे सौ में सिर्फ 16 अंक दिये।

झारखंड में विकसित किए जा रहे हैं पीआईसीयू वार्ड

रांची : मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन की निगरानी में कोविड-19 की संभावित तीसरी लहर के खिलाफ जंग की तैयारी चल रही है। मुख्यमंत्री अस्पतालों में की जा रही व्यवस्थाओं का व्यक्तिगत रूप से निगरानी कर रहे हैं। अधिकारियों को जल्द से जल्द सरकारी अस्पतालों में बच्चों के अनुकूल पेडियेट्रिक इंटेंसिव केयर यूनिट (पीआईसीयू) लगाने का निर्देश दे रखा है।

बच्चों के अनुकूल वार्ड :बच्चों के अनुकूल वार्ड बनाने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। पीआईसीयू वार्डों में अलग-अलग तरह की चाइल्ड फ्रेंडली पेंटिंग की जा रही है। पीआईसीयू वार्डों में उपयोग किए जाने वाले पर्दे, चादरें और कवर बच्चों के लिए आरामदायक वातावरण बनाने के लिए रंगीन और आकर्षक रूप से तैयार किये गये हैं। इसके अलावा, बच्चों के लिए तनाव मुक्त वातावरण हेतु टेलीविजन सेट लगाए जा रहे हैं। अस्पतालों के आंगन और वार्डों के गलियारे को बच्चों की चहलकदमी लायक बनाया जा रहा है। कई स्टोरी बुक और अन्य शिक्षण सामग्री के साथ बुकशेल्फ़ भी स्थापित किए जा रहे हैं।

सीएमपीडीआई में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस-2021 के अवसर पर वैक्सीनेशन कैम्प का आयोजन

रांची : सीएमपीडीआई द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस-21 के अवसर पर जिला प्रशासन के सहयोग से 18-44 वर्ष के लोगों के लिए वैक्सीनेशन कैम्प का आयोजन किया गया। सीएमपीडीआई/डब्ल्यूसीएल के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक मनोज कुमार द्वारा इस कैंप का उद्घाटन किया गया। सीएमपीडीआई डिस्पेंसरी में सभी कर्मियों एवं उनके परिवार के सदस्यों एवं करीबियों को कार्यस्थल पर सुविधाउपलब्ध करायी गयी। इस शिविर में कुल 104 लोगों को वैक्सीन दी गयी।

इस अवसर पर सीएमपीडीआई के निदेशक (तकनीकी/पीएंडडी) ए0के0 राणा, निदेशक (तकनीकी/सीआरडी) एस0के0 गोमास्ता, चिकित्सा अधीक्षक डॉ0 ओम प्रकाश एवं डॉ0 (श्रीमती) शिल्पी स्वरूप उपस्थित थीं।

सीएमपीडीआई में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस-21 मनाया गया। इस वर्ष कोविड-19 महामारी के कारण, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर सीएमपीडीआई के कर्मी एवं उनके परिवार के सदस्योंद्वारा योगाभ्यास घर से किया गया। आयुष मंत्रालय, भारत सरकार के वेबसाइट में उपलब्ध वीडियो तथा योग प्रशिक्षक विकास गोप के मार्गदर्शन में योगाभ्यास किया गया। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस-21 के उपलक्ष्य में सीएमपीडीआई एवं आसपास (कांके रोड) के कक्षा 5 से आठ तक के बच्चों के लिए ऑनलाइन निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। ''जीवन में योग का महत्व'' विषय पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता के विजयी प्रतिभागियों को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर मुख्य अतिथिअजय कुमार, मुख्य प्रबंधक (एचआरडी) द्वारा पुरस्कृत सम्मानित किया गया।

स्पेशल ट्रेनों के परिचालन अवधि में विस्तार

संवाददाता : यात्रियों की सुविधा के लिए निम्नलिखित पूर्णतः आरक्षित स्पेशल ट्रेनों के परिचालन अवधि में विस्तार किये गये है ।

- ट्रेन संख्या 02583 हटिया - आनंद विहार त्रि सप्ताहिक सुपरफास्ट स्पेशल ट्रेन वाया बरकाकाना दिनांक 01/07/2021 से दिनांक 29/07/2021 तक प्रत्येक सोमवार, मंगलवार एवं गुरुवार को हटिया से चलेगी ।
- ट्रेन संख्या 02584 आनंद विहार - हटिया त्रि सप्ताहिक सुपरफास्ट स्पेशल ट्रेन वाया बरकाकाना दिनांक 02/07/2021 से दिनांक 30/07/2021 तक प्रत्येक मंगलवार, बुधवार एवं शुक्रवार को आनंद विहार से चलेगी।
- ट्रेन संख्या 02579 हटिया - आनंद विहार त्रि सप्ताहिक सुपरफास्ट स्पेशल ट्रेन वाया गोमो दिनांक 30/06/2021 से दिनांक 30/07/2021 तक प्रत्येक बुधवार, शुक्रवार एवं रविवार को हटिया से चलेगी।
- ट्रेन संख्या 02580 आनंद विहार - हटिया त्रि सप्ताहिक सुपरफास्ट स्पेशल ट्रेन वाया गोमो दिनांक 01/07/2021 से दिनांक 31/07/2021 तक प्रत्येक गुरुवार , शनिवार एवं सोमवार को आनंद विहार से चलेगी।
- ट्रेन संख्या 08637 हटिया - बेंगलुरु कैंट सप्ताहिक स्पेशल ट्रेन शनिवार दिनांक 03/07/2021 एवं दिनांक 31/07/2021 को हटिया से चलेगी ।
- ट्रेन संख्या 08638 बेंगलुरु कैंट हटिया - सप्ताहिक स्पेशल ट्रेन मंगलवार दिनांक 06/07/2021 एवं दिनांक 03/08/2021 को बेंगलुरु कैंट से चलेगी ।इन ट्रेनों के समय सारणी , ठहराव एवं कोच संयोजन पूर्ववत रहेंगे।

राज्य में बढ़ रहा है जानवर और इंसानों में टकराव

हाथियों के झुंड ने सूटीलोंग गांव के कई घरों को ध्वस्त किया

सिदाम महतो

रांची/बुंडू: जंगली हाथियों का गांव की ओर आने का सिलसिला जारी है। बीते 23 जून की रात को रांची जिला अंतर्गत बुंडू प्रखण्ड के सूटीलौंग गांव में जंगली हाथियों ने धावा बोल दिया ।हाथियों के इस हमले से गांव के प्रदीप महतो का खपरैल का मकान गिर गया। घर में रखे चावल,धान गेहूं को हाथियों ने चारा बना लिया। प्रदीप महतो के प्रधानमंत्री आवास पर भी हाथियों ने हमला किया इससे दरवाजा टूट गया। सात हाथियों के इस झुंड ने गांव के प्रधान महतो के घर पर भी हमला बोल दिया। घटना की रात घर मे बूढ़ी मां सम्पति देवी सो रही थी। आहट सुनकर नींद खुली किसी तरह घर के कोठा में जा कर जान बचाई। परिवार के सदस्य शादी भोज मे शामिल होने गए थे। रात भर तांडव मचाने के बाद हाथियों का झुंड कांची नदी पार कर सुमानडीह के जंगल मे शरण ले लिया। झुंड में दो बच्चा हाथी भी हैं। घटना की सूचना पाकर वनरक्षी प्रफुल्ल टोप्पो सूटीलोंग गांव पहुंचे और मुवावजे की बात कही।

गढ़वा में भालू ने तीन लोगों को मार डाला

संवाददाता:गढ़वा में भालू ने दो सगे भाईयों समेत तीन ग्रामीणों को मार डाला। वहीं तीन लोगों को घायल भी कर दिया। घायलों में एक महिला भी शामिल है। घटना शुक्रवार की शाम उस वक्त घटी, जब ग्रामीण वापस अपने घर लौट रहे थे। ग्रामीण बरगढ़ प्रखंड के बरकोल से अपने टोला में लौट रहे थे। इसी दौरान गांव के पास स्थित जंगल में भालू ने ग्रामीणों पर हमला बोल दिया। भालू ने एक-एक कर तीन लोगों को मार डाला। वहीं एक महिला समेत तीन लोग भालू के हमले में घायल हो गए। तीनों किसी तरह अपनी जान बचाकर भागे। सभी घायलों को इलाज के लिए गढ़वा सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घटना के बाद से ग्रामीणों में दहशत का माहौल है। मृतकों में सुनीता गिद्ध (35 साल), सुमित गिद्ध (38 साल) और राजू मिंज (40 साल) शामिल है। वहीं घायलों में छोटू गिद्ध, उसकी पत्नी मरियम लकड़ा और कमलेश गिद्ध शामिल है।

सूचना के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने तीनों शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए गढ़वा दिया। पुलिस ने बताया कि ग्रामीण निहत्थे थे। भालू काफी बड़ा था और ग्रामीण उसके हमले से बच नहीं सके। एक ग्रामीण के पास कुल्हाड़ी था, मगर वह भी भालू का मुकाबला नहीं कर सके। सूचना मिलने के बाद वन विभाग की टीम भी मौके पर पहुंची और जांच में जुट गई। ग्रामीणों ने विभाग से उचित मुआवजा की मांग की है।

खिलाड़ियों में चोट से ज्यादा बड़ी समस्या बनी मानसिक परेशानी

अनिल अश्विनी शर्मा

अब चोट या डोप टेस्ट के कारण नहीं बल्कि मानसिक स्वास्थ्य के कारण खिलाड़ी हो रहे खेल से बाहर पिछले एक साल में दुनिया के कई टॉप खिलाड़ियों ने मानसिक स्वास्थ्य कारणों से अपने को बड़े खेल आयोजन से अलग किया

अब तक भारत सहित दुनियाभर के खिलाड़ी किसी प्रकार की चोट या डोप टेस्ट के कारण टूर्नामेंट से बाहर होते थे लेकिन अब पहली बार ऐसा हो रहा है कि खिलाड़ी स्वंय ही टूर्नामेंट से अपने को बाहर कर ले रहे हैं। इसका एक मात्र कारण मानसिक स्वास्थ्य यानी मेंटल हैल्थ का ठीक न होना। और मेंटल हैल्थ का सही नहीं होने के वैसे तो कई कारण हैं कि लेकिन पिछले एक साल से अधिक समय से भारत सहित दुनियाभर में फैली कोरोना महामारी ने इस स्थिति को और बढ़ा दिया है। पेरिस में हुये फ्रेंच ओपन ग्रेंड स्लेम टूर्नामेंट से दुनिया की दूसरे नंबर की खिलाड़ी नावोमी ओसाका ने पहला राउंट जीतने के बाद भी अपने को टूर्नामेंट से अलग कर लिया और इसका एक मात्र कारण उन्हीं के शब्दों में , ''मेरे लिए मानसकि सवास्थ्य सबसे अधिक महत्वपूर्ण है और मैं इससे समझौता नहीं कर सकती।'' यह समस्या अकेले ओसाका की नहीं है बल्कि टेनिस सहित क्रिकेट, बॉस्केटबॉल आदि खेलों के कई नामचीन खिलाड़ियों ने भी मानसिक स्वास्थ्य ठीक नहीं होने कारण अपने को टूर्नामेंट से अलग किया। 23 वर्षीय ओसाका ने पिछले सप्ताह ही कहा था कि वे अपनी मानसिक स्थिति की वजह से मैच के बाद का पत्रकारों से बात नहीं करेंगी। उन्होंने कहा कि मेरे लिए ज्यादा महत्वपूर्ण बात यह

एक खिलाड़ी को पिछले एक साल के दौरान अनगिनत बार कोरोना टेस्ट से गुजरना पड़ता है, ऐसे में उनका मानसिक संतुलन ही गड़बड़ा जाता है। हर बार उन्हें इसी बात की चिंता सताए रहती है कि कब मेरा पॉजिटिव आ जाए और वह टूर्नामेंट से बाहर हो जाए। ऐसी मानसकि प्रताड़ना आज दुनिया के हर खिलाड़ी को झेलनी पड़ रही है

है कि मैं मानसिक स्वास्थ्य को कभी कम नहीं मानूंगी और न ही इसे हल्के में लूंगी। इस संबंध में दिल्ली के खेल विशेषज्ञ राकेश थपलियाल ने कहा, ''एक खिलाड़ी को पिछले एक साल के दौरान अनगिनत बार कोरोना टेस्ट से गुजरना पड़ता है, ऐसे में उनका मानसिक संतुलन ही गड़बड़ा जाता है। हर बार उन्हें इसी बात की चिंता सताए रहती है कि कब मेरा पॉजिटिव आ जाए और वह टूर्नामेंट से बाहर हो जाए। ऐसी मानसकि प्रताड़ना आज दुनिया के हर खिलाड़ी को झेलनी पड़ रही है।'' वह कहते हैं कि अब तो यह भी सुनने में आ रहा है कि आगामी ओलंपिक खेलों में हर दिन सभी खिलाड़ियों को कोरोना टेस्ट से गुजरना होगा। ऐसे में अंदाजा लगाया जा सकता है कि खिलाड़ियों पर मानसिक दबाव कितना अधिक होगा। समझो कि कोई खिलाड़ी फाइनल में पहुंच गया है और इसके बाद फाइनल में उसका टैस्ट पॉजिटिव आने पर तो सामने वाले खिलाड़ी को वाकओवर मिल गया और वह जीत गया। लेकिन इमानदारी से देखा जाए तो इस बार ओलंपिक में भी सही खिलाड़ी को मेडल मिलेगा भी या नहीं, यह एक बड़ा सवाल है।

न्यूयार्क टाइम्स में प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार टेनिस में दूसरे नंबर की महिला नाओमी ओसाका ने अपने मानसिक स्वास्थ्य के लिए चिंताओं का हवाला देते हुए फ्रेंच ओपन से नाम वापस ले लिया। रिपोर्ट में कहा गया है कि यह पेशेवर टेनिस में पहली बार है कि ओसाका जैसे महत्वपूर्ण सितारे, जिन्हें शारीरिक चोट नहीं लगी है, फ्रेंच ओपन जैसे बड़े आयोजन के बीच में ही अपने को अलग कर लिया। हालांकि इस संबंध में फ्रेंच फेडरेशन ऑफ के अध्यक्ष गाइल्स मोरेटन ने कहा कि हम सभी एथलीटों की भलाई के लिए लगातार सुधार करने के लिए प्रतिबद्ध हैं, जैसा कि हमने हमेशा करने का प्रयास किया है। लेकिन उनके इस कथन के कुछ समय बाद ही सजा के रूप में ओसाका पर फ्रेंच ओपन के टूर्नामेंट रेफरी द्वारा 15,000 डॉलर का जुर्माना लगाया गया और चार ग्रैंड स्लैम टूर्नामेंट, ऑस्ट्रेलियाई, फ्रेंच और यूनाइटेड स्टेट्स ओपन और विंबलडन के आयोजकों ने धमकी दी थी कि उन्हें फ्रेंच ओपन से निष्कासित किया जा सकता है। यह भी तो एक प्रकार से मानसिक स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ करने जैसी ही बात है।

क्रिकेट भी अछूता नहीं

क्रिकेट के कई खिलाड़ियों ने भी अपनी मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं के कारण अपने को कई बड़े टूर्नामेंट से अलग किया है। इंग्लैंड महिला क्रिकेट टीम की प्रतिभाशाली विकेटकीपर बल्लेबाज सारा टेलर ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेने के बाद खिलाड़ियों के बीच मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याओं को लेकर एक चर्चा की शुरुआत की है। हाल ही में ऑस्ट्रेलिया के तीन खिलाड़ियों ग्लेन मैक्सवेल, विल पुकोव्स्की और निक मैडिनसन ने मानसिक स्वास्थय को ध्यान में रखते हुए क्रिकेट से ब्रेक लिया। इसके बाद भारतीय टीम के कप्तान विराट कोहली ने अपनी प्रतिक्रिया में इन खिलाड़ियों की हिम्मत की तारीफ की। ध्यान रहे कि कोहली स्वयं ने इस संबंध में अपना अनुभव शेयर करते हुए बताया था कि वह भी अवसाद के शिकार हो चुके हैं। इसके अलावा एक और भारतीय क्रिकेटर ने आगे बढ़कर मानसिक स्वास्थ्य के बारे में बात की है। भारतीय सलामी बल्लेबाज अभिनव मुकुंद ने अपने ब्लॉग में बताया कि जब वो मुश्किल दौर से गुजर रहे थे तो उनके अंदर मानसिक समस्या को लेकर किसी से बात करने की हिम्मत नहीं थी क्योंकि उन्हें लगता था कि कोई इन चीजों की परवाह नहीं करता है। लेकिन मुकुंद ने माना कि अब समय बदल गया है और इस विषय को गंभीरता से लिया जाना चाहिए।

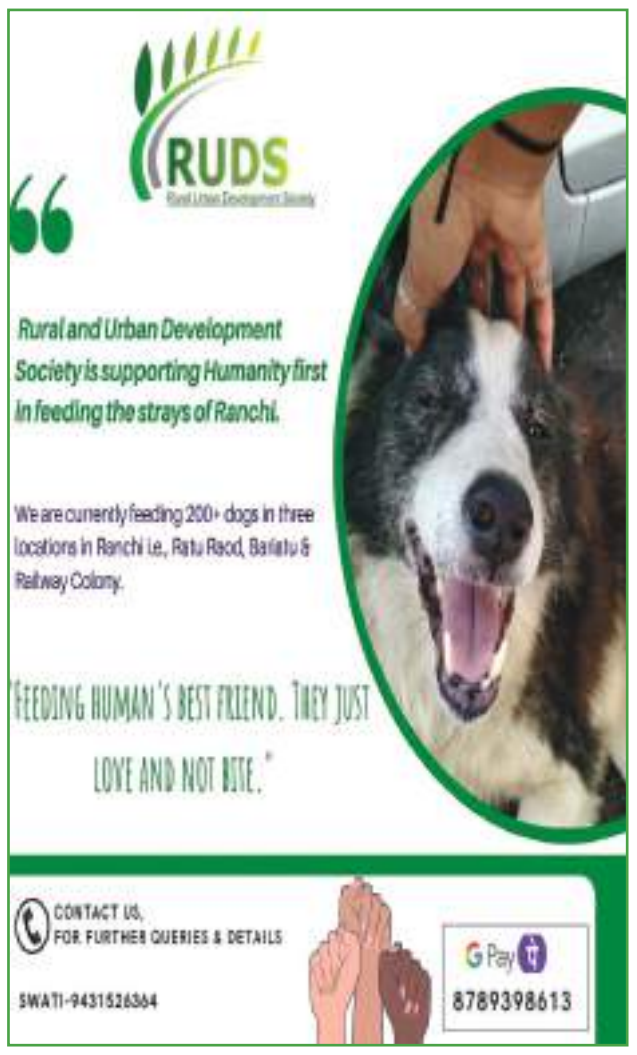

तन मन को खुशी देती है बागवानी

सुनीता कुमारी

सुदर बाग बगीचे भला किसे पसंद नहीं होंगे? हर कोई ऐसी जगह को पसंद करता है और वहां कुछ पल बिताना चाहता है। अब अगर किसी बाग में हर ओर की खुबसूरती और पेड़ पौधे खुद के परिश्रम से लगाये हुये हों तो यह और भी ज्यादा सुकूनदेह और संतुष्ट करती है। ऐसा संतोष और सुकून हम बागवानी से पा सकते हैं। साथ ही यह पर्यावरण को भी संवारने का काम है।

पर्यावरण प्रेमियों के लिए बागवानी एक बेहतरीन विकल्प है। आज के दौर में हमारे पास उचित जगह ना होने के कारण हम अपने छतों और बालकनी में भी बागवानी करते हैं। थोड़ी सी मेहनत कर के हम अनेक प्रकार के पौधे और सब्जियां आदि उगा सकते हैं इससे हमारे घर का वातावरण शुद्ध तो होता ही है,और साथ ही हमारे चारों और हरियाली भी छाई रहती है। उचित खाद जैसे गोबर खली, रसोई से निकले जैविक खाद इत्यादि गमलों में डालने से हमारे पौधे की अच्छी तरह से ग्रोथ होती है। बागवानी करने से हमारा समय तो व्यतीत हो ही जाता है इसके साथ ही हम पर्यावरण की रक्षा करने में भी सहयोग करते हैं।

खाली समय का सदुपयोग कर हम बागवानी कर अच्छा समय व्यतीत कर सकते हैं। इससे हमारे शरीर का व्यायाम भी हो जाता है। बागवानी करने के कई तरह के फायदे हैं एक तो हमें अपने घरों की उगाई हुई फल सब्जियां आदि मिल जाते हैं। जो कि बाजार के मुकाबले काफी शुद्ध और नेचुरल होते हैं। हमें पूजा करने के लिए फूल भी प्राप्त हो जाते हैं। बागवानी काफी सुकून देने वाला कार्य है।

पलायन रोकने में कामयाब हो रहा मुनस्यारी का इकोटूरिज्म

अर्चना सिंह

उत्तराखंड की एक बड़ी समस्या है पलायन। एक अनुमान के मुताबिक राज्य के अस्तित्व में आने के बाद से अब तक तीस लाख लोगों ने पलायन किया है। पलायन को रोकने के लिए राज्य में इकोटूरिज्म को बढ़ावा देकर रोजगार पैदा करने की कोशिश की जा रही है। सरकार को रास्ता दिखाया है मुनस्यारी के सरमोली गांव ने। इस गांव के दिखाए रास्ते पर चलते हुए अन्य गावों में होम स्टे और पर्यटकों को सामुदायिक स्तर पर सुविधाएं देकर पर्यटन के लिए माहौल बनाने की कोशिश हो रही है। इससे स्थानीय लोगों को न केवल रोजगार मिलता है बल्कि पर्यटकों को भी प्रकृति को नजदीक से देखने-समझने का मौका मिलता है। मॉडल गांव सरमोली में यह सब कुछ दशकों से हो रहा है और इस व्यवस्था की बागडोर स्थानीय महिलाओं के हाथ में है। उनका मानना है कि इस आमदनी की वजह से उनके बच्चों का भविष्य बेहतर हुआ है। कहते हैं कि पहाड़ का पानी और पहाड़ की जवानी, पहाड़ में नहीं टिकती। पानी की कहानी तो सबको मालूम है पर यहां जवानी से वास्ता उन युवाओं से है जो रोजगार की तलाश में शहरों की तरफ पलायन करते हैं। वर्ष 2000 में उत्तराखंड के वजूद में आने के बाद राज्य में विकास की कई योजनाएं अस्तित्व में आयीं पर रोजगार पैदा करने में सफलता नहीं मिली। लोगों को पलायन करना बदस्तूर जारी रहा। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक राज्य बनने के बाद लगभग 32 लाख लोगों ने पलायन किया

है। हालात यह है कि अच्छी शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार की तलाश में लोग बाहर जाते रहे और उत्तराखंड में गांव के गांव खाली होते गए। राज्य में ऐसे अनेकों भूतिया गांव हैं जहां की पूरी आबादी पलायन कर चुकी है। वर्ष 2018 में हुए एक सर्वे में सामने आया कि राज्य में करीब हजार ऐसे गांव है जहां की आबादी 100 से कम बची है। रोजगार की समस्याओं के बीच पंचाचुली पर्वत पर बसा मुनस्यारी का सिरमोली गांव एक प्रकाश पुंज की तरह रास्ता दिखा रहा है। गांव के लोग इस बदलाव का श्रेय सामाजिक कार्यकर्ता और पर्वतारोही मल्लिका विर्दी को देते हैं।

ऐसे हुआ गांव का कायापलट

गांव का कायापलट वर्ष 2004 में शुरू हुआ जब विर्दी ने हिमालय आर्क होमस्टे अभियान शुरू किया। यह कार्यक्रम महिलाओं द्वारा ही संचालित है। पर्यटकों को इस कार्यक्रम के तहत गांव के नजरिए से प्रकृति की खूबसूरती दिखाई जाती है। उनका रहना और खाना भी गांव में समुदाय के बीच होता है। पर्यटकों के लिए भांग की चटनी, मडुआ रोटी (रागी) और पहाड़ी राजमा जैसे स्थानीय उपज से पकाया जायकेदार भोजन भी उपलब्ध कराया जाता है। पर्यटक न सिर्फ प्रकृति के बीच रहने का अनुभव लेते हैं बल्कि इच्छानुसार गांव वालों के साथ काम में हाथ भी बंटा सकते हैं। उनके साथ भोजन पका सकते हैं, कपड़ा बुनने का काम कर सकते हैं या फिर स्थानीय त्योहारों में भी शामिल हो सकते हैं। गांव के 20 परिवार पर्यटकों की मेहमान-नवाजी करते हैं और गाइड की भूमिका भी निभाते हैं। गांव की कुछ महिलाओं ने इस दौरान इलाके में मौजूद पशु-पक्षी और पेड़-पौधों की अच्छी जानकारी हासिल कर ली है ताकि पर्यटकों को वहां की सटीक जानकारी उपलब्ध करा सकें। होमस्टे में रुकने वाले पर्यटकों को मुनस्यारी का स्थानीय खाना खिलाया जाता है। इसमें मडुआ की रोटी, भट का सूप और दूसरे स्थानीय व्यंजन शामिल हैं। मुनस्यारी एक जैव-विविधता वाला इलाका है और यहां 325 तरह की पक्षियों का बसेरा है। इस वजह से यह स्थान पक्षी प्रेमियों के आकर्षण का केंद्र है। आर्क हिमालय कार्यक्रम महिलाओं द्वारा ही संचालित होता है।

आर्क हिमालय कार्यक्रमहोने वाली 95 फीसदी आमदनी उन्हीं के पास जाती है। दो फीसदी खर्च पर्यावरण संरक्षण पर होता है जिसमें जंगल, झील और नदी संरक्षण शामिल है। बचे हुए पैसों का इस्तेमाल महिलाओं की ट्रेनिंग और दैनिक कामों पर किया जाता है।आर्क हिमालय कार्यक्रम के तहत गांव वालों ने पर्यटकों के लिए 2,438 मीटर से लेकर 3,780 मीटर के ट्रेक के अलावा अखरोट के जंगल में सैर कराते हैं। यहां एक ग्रामीण के घर औसतन दुनियाभर से अतिथि आते हैं और 10 से 15 दिन तक ठहरते हैं।

कोराना संकट में गायिका श्रेया घोषाल ने दूनिया को दिया एक होने का संदेश

नेहा कुमारी

भारत की दो महान हस्तियों प्रमुख संगीतकार ए आर रहमान और भारतीय संगीतकार गुलजार का नया गाना 25 जून को रिलीज हुआ। जिसका टीजर 'वर्ल्ड म्यूजिक डे' पर इंस्टाग्राम हैंडल पर पोस्ट किया गया था। ए आर रहमान के नए गाने ***"मेरी पुकार सुनो"*** में पार्श्वगायिका श्रेया घोसाल ने मुख्य भूमिकानिभायी। इसके अलावा अन्य बेहतरीन, मशहूर गायकों ने भी इसमें गाया। जिसमें अल्का याज्ञनिक, के एस चित्रा, साधना सरगम, शशा तिरुपति, अरमान मलिक, एसेस कौर और निभायी। इस गाने का मूल उद्देश्य एक जहान, एक उम्मीद। एक वादा है जिसका लक्ष्य आशा की भावना पैदा करके दुनिया को एक होने का संदेश देना है और हम सब एक दूसरे से जुड़े है इसलिए हम सब ठीक हो जाएंगे।

33 जलीय जीवों के बहुत ही आक्रामक होने का है खतरा

शोधकर्ताओं ने जोखिम आकलन उपकरण से पता लगाया कि किसी प्रजाति का स्कोर जितना अधिक होगा, उस प्रजाति के आक्रामक होने का खतरा उतना ही अधिक होगा।

दुनिया भर में जीवों पर किए गए एक खतरे के आकलन से पता चला कि पानी में रहने वाली 33 प्रजातियों पर आक्रामक होने का खतरा मंडरा रहा है। अध्ययन के मुताबिक इस सब के लिए जलवायु परिवर्तन को जिम्मेवार ठहराया गया है। आक्रामक प्रजातियां दुनिया के कई इलाकों में आसानी से ढल एवं फैल जाती हैं। ये इन इलाकों में अपना खतरनाक प्रभाव डाल सकते हैं। दुनिया भर में आक्रामक प्रजातियों को एक ही नजर से देखने की आवश्यकता है, ताकि यह पता लगाया जा सके कि कौन सी प्रजातियां देशी प्रजातियों और पारिस्थितिक तंत्र पर असर डालकर एक बड़ा खतरा पैदा कर सकती हैं। यूनिवर्सिटी ऑफ़ फ्लोरिडा, इंस्टिट्यूट ऑफ़ फ़ूड एंड एग्रीकल्चरल साइंसेज (आईएफएएस) के प्रोफेसर जेफ हिल ने दुनिया भर के वैज्ञानिकों के साथ मिलकर जलीय प्रजातियों के लिए एक

आक्रामक जांच किट विकसित की है। हिल सहित वैज्ञानिकों ने इस तरह के जीवों के आक्रमक खतरों का आकलन करने के लिए इस किट का इस्तेमाल किया है। एक बार इन जीवों के अपने मूल सीमा के बाहर फैलने के बाद, ये आक्रामक प्रजातियां पर्यावरणीय, सामाजिक या लोगों के स्वास्थ्य के लिए खतरनाक हो सकती हैं। **डीटीई**

एक वर्ष में बढ़ गई ओलिव रिडले कछुओं की संख्या

शिरीश खरे

महाराष्ट्र राज्य वन-विभाग द्वारा समुद्री कछुए सहित कई दुर्लभ मछलियों की प्रजातियों के संवर्धन के लिए वर्ष 2012 में गठित स्वायत्त-संस्था 'मेंग्रोव फाउंडेशन' के आंकड़ों के अनुसार भी ऑलिव रिडले मादा कछुओं द्वारा समुद्र तट पर अंडे देने के लिए बनाए गए गड्ढों की संख्या पिछले एक वर्ष में दो गुना से ज्यादा बढ़ गई है।

देखा जाए तो महाराष्ट्र में करीब 720 किलोमीटर लंबा समुद्री किनारा है। इसमें महज रत्नागिरी, सिंधुदुर्ग और रायगड जिलों में ही क्रमशः 14, 14 और 4 समुद्र तटों पर ऑलिव रिडले कछुआ प्रजाति की मादाएं हर साल नवंबर से अप्रैल महीनों के बीच अंडे देती आ रही हैं। इसके लिए ये कछुआ मादाएं समुद्र तट पर 50 से 80 मीटर दूर तक करीब 18 इंच गहरा गड्ढा बनाती हैं और एक बार में उसमें 80 से 170 तक अंडे देती हैं। फिर ये कछुआ मादाएं गड्ढों में रखे अंडों को रेत से अच्छी तरह ढंककर समुद्र की ओर लौटती हैं। 'मेंग्रोव फाउंडेशन' के अनुसार पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष मार्च तक रत्नागिरी, सिंधुदुर्ग और रायगड जिलों में ऑलिव रिडले कछुआ प्रजाति की मादाओं ने अपने अंडे देने के लिए समुद्र तट पर 233 गड्ढे अधिक बनाए। वर्ष 2019-20 में इस कछुआ प्रजाति की मादाओं ने अपने अंडे देने के लिए 228 गड्ढे बनाए थे। इनमें रत्नागिरी, सिंधुदुर्ग और रायगड जिलों के समुद्री तटों पर क्रमशः 148, 65 और 15 गड्ढे मिले। वहीं, वर्ष 1920-21 के मार्च तक इस कछुआ प्रजाति की मादाओं ने अपने अंडे देने के लिए 451 गड्ढे बनाए हैं। इनमें रत्नागिरी, सिंधुदुर्ग और रायगड जिलों के समुद्री तटों पर अब तक क्रमशः 277, 146 और 28 गड्ढे मिल चुके हैं।

बीते दो दशकों में यहां ग्राम-पंचायत से लेकर महाराष्ट्र राज्य वन-विभाग, स्थानीय रहवासियों, मछुआरों, स्कूल व कॉलेज के छात्रों, सरकारी कर्मचारियों, प्रकृति प्रेमियों, जीव-जंतु विशेषज्ञों, जीव-वैज्ञानिकों और चिकित्सकों तक सामुदायिक दृष्टिकोण से संचालित एक इकाई तैयार हुई है।

उल्लेखनीय है कि पर्यावरण संरक्षण की दिशा में कार्य करने वाले विश्व के सबसे बड़े संगठनों में से एक 'आईयूसीएन' (इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंजरवेशन ऑफ नेचर) द्वारा जारी रेड-लिस्ट में ऑलिव रिडले कछुआ प्रजाति को अति-संवेदनशील प्रजातियों की श्रेणी में रखा गया है। इसके अलावा, हमारे देश में इसे कानूनी रुप से संरक्षित करने के लिए 'भारतीय वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972' के परिशिष्ट-क में रखा गया है।

पुरुषों के मुकाबले ज्यादा सक्रिय हैं भारतीय महिलाएं

झुमकी कुंडू

भारत में कहीं ज्यादा महिलाएं, पुरुषों से शारीरिक तौर पर सक्रिय हैं। इसी तरह यह अंतर ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में भी साफ दिखता है, जहां शहरों की तुलना में गावों में रहने वाले 45 वर्ष से ऊपर आयु के कहीं ज्यादा पुरुष शारीरिक तौर पर सक्रिय हैं। यह जानकारी लॉन्गिट्यूडिनल एजिंग स्टडी इन इंडिया (एलएएसआई) में सामने आई है। हालांकि भारत में ज्यादातर उम्र दराज लोग इस बात से वाकिफ हैं कि यदि रोजाना व्यायाम और अन्य तरह की शारीरिक गतिविधियां की जाएं तो उससे पुराने से पुराने मर्जों को दूर किया जा सकता है, इसके बावजूद देश की एक बड़ी आबादी नियमित रूप से इस स्वास्थ्यकर जीवनशैली का पालन नहीं करती है। शोध के मुताबिक 45 वर्ष से अधिक आयु की जहां 68.7 फीसदी महिलाऐं शारीरिक रूप से सक्रिय थी वहीं इस आयु वर्ग के पुरुषों में यह आंकड़ा 59.8 फीसदी दर्ज किया गया था।

वहीं यदि 60 वर्ष से अधिक आयु वाले वर्ग की बात करें तो जहां 30.8 फीसदी पुरुष शारीरिक तौर पर सक्रिय थे वहीं महिलाओं में यह आंकड़ा 56.9 फीसदी था। यह बात इस पर भी मायने रखती है कि लोग कहां रहते हैं जहां ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले 61.7 फीसदी पुरुष शारीरिक तौर पर ज्यादा फिट थे वहीं शहरी क्षेत्रों में यह आंकड़ा केवल 55.4 फीसदी था। वहीं यदि महिलाओं की बात करें तो यह आंकड़े उससे अलग हैं जहां ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली 67.6 फीसदी महिलाएं ज्यादा सक्रिय थी वहीं शहरों में यह आंकड़ा 70.9 फीसदी था।

यदि राज्यवार देखा जाए तो हिमाचल प्रदेश, असम, कर्नाटक, झारखंड, पुडुचेरी और नागालैंड में रहने वाले 45 वर्ष से अधिक आयु के तीन-चौथाई से अधिक निवासी शारीरिक रूप से सक्रिय हैं। हालांकि राज्य स्तर पर भी लिंग के आधार पर अंतर साफ देखा जा सकता है। हर राज्य में कहीं अधिक महिलाएं पुरुषों के मुकाबले ज्यादा सक्रिय थीं।

45 वर्ष से अधिक आयु की जहां 68.7 फीसदी महिलाऐं शारीरिक रूप से सक्रिय थी, वहीं इस आयु वर्ग के पुरुषों में यह आंकड़ा 59.8 फीसदी दर्ज किया गया था

सबसे आलसी हैं मिजोरम और दिल्ली के पुरुष

यदि शारीरिक रूप से सबसे कम सक्रिय वृद्ध पुरुषों की बात करें तो यह आंकड़ा मिजोरम में सबसे ज्यादा करीब 80 फीसदी था। वहीं इसके बाद दिल्ली में 63 फीसदी, तेलंगाना में 62 फीसदी और हरियाणा में 60 फीसदी वृद्ध पुरुष शारीरिक रूप से कम सक्रिय थे। हालांकि, इस आयु वर्ग की आधी से अधिक महिलाएं मिजोरम में 75 फीसदी, अरुणाचल प्रदेश में 56 फीसदी, दिल्ली में 55 फीसदी और हरियाणा में 50 फीसदी, वो भी शारीरिक रूप उतनी सक्रिय नहीं थी।

एक अध्ययन के अनुसार यदि आप रोजाना व्यायाम करते हैं तो इससे ह्रदय और अन्य रोगों का खतरा कम हो जाता है। दूसरी और वृद्धावस्था में शारीरिक रूप से कम सक्रियता खराब शारीरिक फिटनेस और बीमारी को दिखाता है जोकि धूम्रपान, अत्यधिक शराब का सेवन और मोटापे का भी नतीजा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी बुजुर्गों को सप्ताह में लगभग 150 मिनट मध्यम-तीव्रता वाले व्यायाम और गतिविधियां करने की सलाह दी है। साथ ही बुजुर्गों को ग्रुप में प्रशिक्षण देकर और चिकित्सकों, परिवार के सदस्यों या दोस्तों द्वारा इसके लिए प्रेरित किया जा सकता है।

डीप ओसियन मिशन को सरकार ने दी मंजूरी

ललित मौर्य

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 4,077 करोड़ रुपए के 'डीप ओसियन मिशन' को मंजूरी दे दी है, जिसका उद्देश्य महासागरीय संसाधनों का शाश्वत उपयोग करना है

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति ने गहरे समुद्र में संसाधनों का पता लगाने और महासागरीय संसाधनों के सतत उपयोग के लिए 'गहरे समुद्र अभियान' को मंजूरी दे दी है। इस अभियान का उद्देश्य गहरे समुद्र से जुड़ी प्रौद्योगिकियों को विकसित करना है। इस मिशन का प्रस्ताव पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (एमओईएस) ने किया था।

इस अभियान को चरणबद्ध तरीके से लागू करने के लिए 5 वर्षों में करीब 4,077 करोड़ रुपए की लागत आएगी। वहीं पहले चरण में 3 वर्षों (2021 से 2024) पर करीब 2823.4 करोड़ रुपए का खर्च आएगा। यह एक मिशन आधारित परियोजना है जो भारत सरकार की नील अर्थव्यवस्था पहल का समर्थन करेगी। वहीं पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (एमओइएस) इस बहु-संस्थागत महत्वाकांक्षी अभियान को लागू करने वाला नोडल मंत्रालय होगा। महासागर हमारे लिए बहुत मायने रखते हैं। विश्व के लगभग 70 फीसदी हिस्से पर महासागर मौजूद हैं जोकि हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग हैं। हालांकि इसके बावजूद गहरे समुद्र का लगभग 95 फीसदी हिस्सा अभी तक खोजा नहीं जा सका है। यदि भारत की भौगोलिक स्थिति को देखें तो उसके तीन किनारे महासागरों से घिरे हैं। देश की लगभग 30 फीसदी आबादी तटीय क्षेत्रों में रहती है। यह मत्स्य पालन, जलीय कृषि, पर्यटन, आजीविका और नील व्यापार के लिए अत्यंत मायने रखते हैं।

क्यों मायने रखता है यह मिशन?

महासागर न सिर्फ भोजन, ऊर्जा, खनिजों और औषधियों का भंडार हैं साथ ही यह मौसम और जलवायु को भी काफी हद तक प्रभावित करते हैं। संक्षेप में कहें तो यह पृथ्वी पर जीवन का आधार हैं। यही वजह है कि दीर्घकालिक रूप से महासागरों के महत्व को देखते हुए, संयुक्त राष्ट्र ने 2021 से 2030 के दशक को महासागरों के शाश्वत विकास के लिए महासागर विज्ञान दशक के रूप में घोषित किया है।

भारत की समुद्री स्थिति अद्वितीय है। इसकी 7,517 किलोमीटर लंबी तटरेखा है, जो नौ तटीय राज्यों से गुजरती है और 1,382 द्वीपों का आवास है। गौरतलब है कि 2030 तक के लिए जारी नए भारत के विकास की अवधारणा के दस प्रमुख आयामों में से नील अर्थव्यवस्था भी एक प्रमुख आयाम है। इस अभियान में छह प्रमुख घटक शामिल हैं, जिनमें गहरे समुद्र में खनन और मानवयुक्त पनडुब्बी के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास, महासागर जलवायु परिवर्तन सलाहकार सेवाओं का विकास, गहरे समुद्र में जैव विविधता की खोज और संरक्षण के लिए नई तकनीकों को बढ़ावा, वहां सर्वेक्षण और अन्वेषण करना, महासागर से ऊर्जा और मीठे पानी को प्राप्त करना और महासागर जीवविज्ञान के लिए उन्नत समुद्री स्टेशन की स्थापना करना शामिल है।

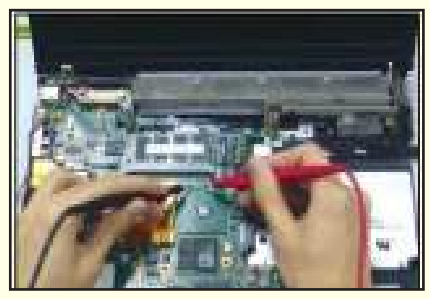

गहरे समुद्र में खनन करने के लिए आवश्यक प्रौद्योगिकियों का रणनीतिक महत्व है लेकिन भारत में यह वाणिज्यिक रूप से उपलब्ध नहीं हैं। इसलिए इस मिशन के तहत अग्रणी संस्थानों और निजी उद्योगों के सहयोग से प्रौद्योगिकियों को स्वदेश में ही निर्मित करने का प्रयास किया जाएगा। गहरे समुद्र में खोज के लिए भारतीय शिपयार्ड में एक शोध पोत भी बनाया जाएगा, जो रोजगार के अवसर भी पैदा करेगा।

यह मिशन समुद्री जीव विज्ञान क्षमता के विकास पर भी ध्यान देगा जो रोजगार के नए अवसर पैदा करेगा। इसके साथ ही विशेष उपकरणों, जहाजों के डिजाइन, विकास और निर्माण और आवश्यक बुनियादी ढांचे की स्थापना से भारतीय उद्योग, विशेष रूप से एमएसएमई और स्टार्ट-अप के विकास को भी गति मिलने की उम्मीद है।

अखबार के स्वामी सन कम्युनिकेशन के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक मनोरंजन सिंह द्वारा मेसर्स डी. बी. कॉर्प लिमिटेड,प्लॉट नं535 एवं 1272 ललगुटवा पुलिस स्टेशन, रातू, रांची (झारखंड) से मुद्रित एवं सन कम्युनिकेशन,अपोजिट कब्रिस्तान गेट नं.-2,रातू रोड, रांची- 834001 (झारखंड) से प्रकाशित। संपादकः एम.के.शर्मा * (पी.आर.बी. अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिये उत्तरदायी)आर.एन.आइ. पंजीयन क्रमांक : JHAHIN/2019/78094, email:greenrevolt2019@gmail.com. ☎ 0651-2283018, 8539978825, 8825374626. समस्त विवाद रांची न्यायालय के अधीन होंगे।